हिन्दी सान्ध्य दैनिक जौनपुर,लखनऊ व भदोही से प्रकाशित

देश की उपासना

www.Deshkiupasana.com
www.Deshkiupasana.in
www.Deshkiupasana.org

देश के विकास में समर्पित समाज के सभी वर्गों के लिए

dku live &
dkunews24

वर्ष : 01 अंक–57 : जौनपुर, शनिवार 22 अक्टूबर 2022 सान्ध्य दैनिक (संस्करण) पेज –4 मूल्य : 2 रूपया

ऐतिहासिक और अभूतपूर्व होगा अयोध्या का दीपोत्सव –मुख्यमंत्री योगी

लखनऊ ब्यूरो : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि इस बार का दीपोत्सव ऐतिहासिक और अभूतपूर्व होगा। शुक्रवार रात सीएम आवास पर अयोध्या दीपोत्सव की तैयारियों की समीक्षा करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि हर वर्ष रिकॉर्ड दीये जलने से यह आयोजन वैश्विक मंच पर नई ऊंचाइयों को छू रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि दीपोत्सव में भगवान श्रीराम की अयोध्या वापसी, भरत मिलाप, श्रीराम राज्याभिषेक प्रसंगों का प्रतीकात्मक चित्रण भी होगा। प्रधानमंत्री की ओर से सरयू की आरती भी उतारी जाएगी। उन्होंने कहा कि इन अवसरों पर समयानुकूल सुमधुर भजन, आरती, मानस की चौपाइयां व दोहा का गायन होना चाहिए। उन्होंने कहा कि इनसे समारोह और अधिक शोभायमान और अविस्मरणीय होगा।उन्होंने कहा कि मुख्य समारोह से पहले पूरे अयोध्या जिले में स्वच्छता व सैनिटाइजेशन का विशेष अभियान चलाया जाए।किसी भी श्रद्धालु अथवा पर्यटक को अनावश्यक परेशानी न उठानी पड़े। मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री की मौजूदगी के चलते सुरक्षा व्यवस्था के पुख्ता इंतजाम करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री की सुरक्षा व्यवस्था के मानकों का पूरी तरह पालन होना चाहिए। इसमें गलती की कोई गुंजाइश नहीं होनी चाहिए। उन्होंने अयोध्या के सीमावर्ती जिलों को अलर्ट रखने और सीमाओं पर अपर पुलिस अधीक्षक स्तर के अधिकारियों की तैनात करने के निर्देश दिए। उन्होंने अयोध्या में निर्बाध विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करने के भी निर्देश दिए। राज्यपाल, सीएम ने दी धनतेरस व दिवाली की बधाई, योगी ने ट्विटर पर डीपी बदली, लगाया दीपोत्सव का लोगो राज्यपाल आनंदीबेन पटेल और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ समेत कई

नेताओं ने धनतेरस, दिवाली, गोवर्धन पूजा व भाई दूज के अवसर पर प्रदेशवासियों को बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए ईश्वर से उनकी सुख–समृद्धि की कामना की है। मुख्यमंत्री ने ट्विटर पर अपनी डीपी भी बदल दी है। उन्होंने डीपी पर दीपोत्सव का लोगो लगाया है। वहीं, राज्यपाल ने कहा कि दिवाली का पर्व भारत की सनातन धर्म की परंपरा का एक महत्वपूर्ण पर्व है। इस दिन जरूरतमंदों के जीवन में खुशियां लाने का प्रयास करें। मुख्यमंत्री ने कहा कि भारतीय संस्कृति में अर्थ सहित चार प्रकार के पुरुषार्थ बताए गए हैं। धनतेरस इसी का द्योतक है। उन्होंने भरोसा जताया कि प्रदेश में अन्त्योदय की भावना के अनुरूप समाज के अंतिम व्यक्ति को भी सुख–समृद्धि प्राप्त होगी। इसके अलावा मंत्री आशीष पटेल, अनिल राजभर, मन्नू कोरी, सतीश चंद्र शर्मा, बेबीरानी मौर्य ने भी सभी को बधाई दी है।

सैन्य अफसर बनने के लिए एसएसबी का महत्व सॉर्ट कैप्सूल या लगातार तैयारी –ब्रिगेडियर यशपाल सिंह

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

लखनऊ। जी एस एम डिफेंस एकेडमी के मैनेजिंग डायरेक्टर ब्रिगेडियर यशपाल सिंह ने कहा कि बच्चों की पर्सनैलिटी पर अभिभावक एवं शिक्षण संस्थान प्रारंभ से ध्यान दें, बच्चों की पर्सनैलिटी डिवेलप करने में कई साल लगते हैं। कई वर्षों की मेहनत के बाद पर्सनैलिटी डिवेलप हो पाती है जबकि लिखित परीक्षा मात्र 6 महीने से 2 साल के अंदर तैयारी की जा सकती है। अमूमन ऐसा देखा गया है कि बच्चे लिखित परीक्षा के लिए लगभग 2 साल देते हैं लेकिन पर्सनैलिटी डेवलपमेंट और एसएसबी की तैयारी के लिए अधिकतम 15 दिन देते हैं। शिक्षण संस्थानों की ओर संकेत करते हुए कहा उन्होंने कहा कि कर्तव्य बोध के साथ बच्चों की पर्सनालिटी डेवलपमेंट पर ध्यान शिक्षक एवं अभिभावक दें। बच्चे अपने माता–पिता और शिक्षकों से ही ज्यादा सीखते हैं इन्हीं के अधिकतर करीब रहते हैं इसलिए बाल्यकाल में पड़े हुए संस्कार अमिट होते हैं। झूठ बोलना भी बच्चा घर से ही सीखता है सबसे बड़ी कमी यही होती है।साइकोलॉजी के शिक्षक झूठ को पकड़ लेते हैं और बच्चे फेल हो जाते हैं।उन्होंने जोर देते हुए कहा कि बच्चे कहते हैं मैं सुबह 5:00 बजे उठ जाता हूं लेकिन अमूमन ऐसा होता नहीं है।बच्चे का हाव–भाव ही बता देता है कि वह सही बोला या झूठ इसलिए लिखित परीक्षा से ज्यादा पर्सनालिटी डेवलपमेंट पर जोर देना चाहिए। उन्होंने युवाओं को सलाह देते हुए कहा कि युवा वर्ग अन्य गतिविधियों में अधिक समय लगाते हैं

जबकि पढ़ाई पर कम। सपने देखना और इच्छाशक्ति होना दोनों अलग–अलग है। निश्चित रूप से अगर सेना में जाना चाहते हैं तो प्रतिदिन न्यूजपेपर पढ़ें, जी के की तैयारी करें।सेना के बारे में जाने, लिखित परीक्षा और एसएसबी, फिजिकल की एक साथ तैयारी करें। गेम खेलें, फिजिकली फिट हो, किताबें पढ़ें और अपनी हॉबीज बनाएं। जितना मौका मिले पब्लिक फोरम में बातचीत करें,अपनी पब्लिक स्पीकिंग को सुधारें। बोलने , लिखने की क्षमता में हर वक्त सुधार लाएं।

आवश्यक सूचना

आप सभी पाठक बन्धुओं से अनुरोध है कि आनलाइन समाचार पत्र पढ़नें और ई–पेपर का लाभ लेने हेतु हमारे निम्नांकित वेबसाइट एवं न्यूज पोर्टल - dku live चैनल पर सम्पर्क कर लाभ उठायें– उ0प्र0 के सभी जनपदों एवं तहसीलों से पत्रकार बननें के लिए सम्पर्क करें–

www.Deshkiupasana.com
www.Deshkiupasana.in
www.Deshkiupasana.org

–संपादक

रंगोली प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने दिखाई प्रतिभा

गोरखपुर मण्डल प्रभारी आशुतोष चौधरी : बीएसएन ग्लोबल स्कूल शाहपुर में दीपावली पर्व के उपलक्ष्य में शनिवार को रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें विद्यार्थियों ने उत्साह पूर्वक भाग लेते हुए अपने प्रतिभा का प्रदर्शन किया। रंगोली प्रतियोगिता का शुभारम्भ निदेशक जे.के. जायसवाल ने किया। उन्होंने छात्र–छात्राओं को दीपावली पर्व की शुभकामनाएं देते हुए पर्व को सौहार्दपूर्ण मनाने की अपील की। छात्र–छात्राओं ने रंगोली प्रतियोगिता में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। रंगोली प्रतियोगिता में अपनी कला का परिचय देते हुए सभी प्रतिभागियों ने विभिन्न प्रकार की कलात्मक रंगोली बनाकर उसे रंग–बिरंगे रंगों से सजा कर अपनी सृजनात्मकता का प्रदर्शन किया।रंगोली प्रतियोगिता मे प्रथम स्थान पर आलोक और आजाद , द्वितीय स्थान पर कृति और मंतशा तथा तृतीय स्थान पर रितिका और बिट्टन मिश्रा रही।इस अवसर पर विद्यालय के निदेशक जे.के. जायसवाल ने बच्चों के उत्कृष्ट प्रदर्शन की सराहना की। बताया कि इस तरह के कार्यक्रमों के माध्यम से बच्चे अपनी प्रतिभा दिखाते हैं। इससे उनका चहुंमुखी विकास होता है। प्रतियोगिता का सफलतापूर्वक संचालन चन्द्रकला मौर्य ने किया।इस अवसर पर दीपक सिंह, चन्द्रमति यादव, कुसुम,वर्षा श्रीवास्तव, प्रतिभा, बबिता, सुमन आदि मौजूद रहे।

पीएच इंटरनेशनल स्कूल पर सांस्कृतिक सप्ताह के अंतर्गत आज रंगोली और क्राफ्ट प्रतियोगिता का आयोजन संपन्न

गोरखपुर मण्डल प्रभारी आशुतोष चौधरी : कक्षा 12 के बच्चो ने इको फ्रेंडली रंगोली बनाकर सबका मन मोह लिया इस में श्रृष्टि यादव, अनामिका, सेजल, नूर , अवंतिका गिरी, अंकिता, श्वेता यादव , शेफाली रही। इसके अलावा प्रथम पुरस्कार कक्ष 9 के बच्चो ने जीता।। इस में रोहित, सोनी, नंदिनी , अरिशा , अंशिका ,अशिफा और शैली रही द्वितीय पुरस्कार कक्ष 9 की बच्चे अंशिका, वसुंधरा, अदिति, सौम्या यादव, कौशिक रहे तृतीय स्थान पर पलक , बिट्टू यादव और अंकिता कक्षा 8 के बच्चो ने जीता। कक्ष 6 के बच्चो ने अनन्या, आराध्या, ज्योति, एकरा, समीक्षा ने मुख्य द्वार पर शानदार रंगोली बनाकर सबका स्वागत किया और दीप प्रज्वलन कर मां सरस्वती कि आरती की कार्यक्रम का शुभारंभ प्रबंधक मनोज जी ने दीप जलाकर और मां सरस्वती को माल्यार्पण कर किया। मुख्य जजों में प्रवीण श्रीवास्तव, महिप श्रीवास्तव के साथ शिक्षक गणों में

हरिमोहन त्रिपथी, संजय , चतुर्भुज पांडे, जास्मिन व दीपक कश्यप रहे। विजेताओं को मेडल व प्रशाति पत्र देकर पुरस्कृत किया गया। अन्य शिक्षको में सत्यानंद , किसन शाह, रमेश , मधु , राधिका सिंह , चंद्रा श्रीवास्तव , प्रिया, पूजा , अनामिका , प्रीति , अंजू , काजल जैनब और सीमा सिंह रहे। प्रधानाचार्य जान पीटरसन ने सभी को दिवाली की शुभकामनाएं दी।

दिवाली–छठ पर रोडवेज चलाएगा 6597 अतिरिक्त बसें : अफसरों को दिए गए आवश्यक निर्देश

लखनऊ ब्यूरो : दिवाली और छठ पर रोडवेज 20 क्षेत्रों में 6597 बसें चलाएगा। इस संबंध में परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह ने निर्देश जारी कर दिए हैं। उन्होंने कहा कि दीपावली और छठ के दौरान यात्रियों को परिवहन संबंधी असुविधा न हो, अफसर इसका विशेष ध्यान रखें। परिवहन निगम के प्रबंध निदेशक संजय कुमार ने बताया कि दिवाली 23 व 24 अक्तूबर एवं छठ 30 अक्तूबर को मनायी जाएगी। इस अवधि में दस दिनों तक अतिरिक्त बसें यात्रियों की सेवा में रहेंगी। दीपावली में कौशांबी, आनंद विहार एवं सराय काले खां बस स्टेशन (दिल्ली, एनसीआर) से लखनऊ, वाराणसी, गोरखपुर, आजमगढ़, बरेली, बदायूं, मेरठ, सहारनपुर, इटावा, कानपुर, झांसी, प्रयागराज, बहराइच के लिये बसें चलाई जाएंगी। उन्होंने बताया कि चालकों, परिचालकों, कार्यशाला व बस स्टेशन पर तैनात कर्मचारियों के लिए विशेष प्रोत्साहन योजना शुरू की गई है। दिल्ली (कौशांबी, आनंद विहार एवं सराय काले खां), लखनऊ, कानपुर एवं प्रदेश के अन्य प्रमुख बस स्टेशनों पर राउंड द क्लॉक कर्मचारियों एवं पर्यवेक्षकों की ड्यूटी लगाई गई हैं। एमडी के अनुसार, नई दिल्ली के पुलिस आयुक्त से अनाधिकृत बसों को आनंद विहार एवं दिल्ली के अन्य बस अड्डों से न चलने देने का अनुरोध किया गया है। सामान्य दिनों में

निगम दस हजार सेवाएं संचालित कर रहा है। दीपावली एवं छठ पर छह हजार पांच सौ अतिरिक्त सेवाएं दी जाएंगी। प्रबंधकों को मिलेगी प्रोत्साहन राशि अपर प्रबंध निदेशक अन्नपूर्णा गर्ग ने बताया कि त्योहार पर प्रति बस आय में बढ़ोतरी करने वाले क्षेत्र, डिपो के तीन क्षेत्रीय प्रबंधकों एवं सेवा प्रबंधक तथा हर क्षेत्र के एक–एक सहायक प्रबंधक को 5100 रुपये पुरस्कार के साथ मुख्यालय से विशेष प्रशस्ति पत्र दिया जाएगा।

जिलाधिकारी द्वारा विकास भवन सभागार में जिला शिक्षा अनुश्रवण समिति की मासिक बैठक संपन्न

जौनपुर सू.वि. : जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा की अध्यक्षता में विकास भवन के सभागार में जिला शिक्षा अनुश्रवण समिति की मासिक बैठक संपन्न हुई। ऑपरेशन कायाकल्प के तहत परिषदीय विद्यालयों को निर्धारित 19 पैरामीटर पर संतृप्त कराना है, जिसके लिए सभी खंड विकास अधिकारी, खंड शिक्षा अधिकारी और एडीओ पंचायत आपस में समन्वय में करते हुए पूर्ण करें। डोभी के पांच एआरपी जिनका सपोर्टिव सुपरविजन शून्य है, उनको नोटिस जारी करने के निर्देश दिए गए।खंड शिक्षाधिकारियों को निर्देशित किया कि जिन विद्यालयों में अभिभावकों के द्वारा उर्दू न पढ़ाये जाने के कारण नामांकन नहीं करा रहे उन विद्यालयों में उर्दू शिक्षकों की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। विकासखंड करंजाकला के प्राथमिक विद्यालय दरवेशपुर के छात्रों के क्रियाकलापों बने प्रेजेंटेशन को अधिकारियों ने देखा और सराहना की। उन्होंने कहा कि सभी खंड शिक्षाधिकारी सुनिश्चित करें कि विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों के जन्मदिन मनाये जाए। विद्यालयों में पुरातन छात्रों के साथ बैठक कराई जाएं। पुरातन छात्रों की सूची विद्यालयों में पेंट कराई जाए। बेसिक शिक्षा

अधिकारी डा0 गोरखनाथ पटेल को निर्देशित किया कि यदि कोई छात्र लगातार अनुपस्थित हो रहा है तो शिक्षक की जिम्मेदारी तय की जाये। जिलाधिकारी द्वारा निर्देशित किया गया कि डीबीटी के तहत शत–प्रतिशत छात्रों के खाते में पैसे भेज दिए जाएं। किताबों के वितरण के संबंध में जानकारी ली और खंड शिक्षा अधिकारियों को निर्देशित किया कि जैसे ही किताबें प्राप्त हो उसी दिन वितरण करना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि निपुण लक्ष्य को शत–प्रतिशत प्राप्त करें। सभी न्याय पंचायतों में डिस्कवरी लैब बन जाए, जिससे बच्चों के मन में विज्ञान के प्रति रुचि बढ़े। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी साईं तेजा सीलम, बेसिक शिक्षा अधिकारी डॉक्टर गोरखनाथ पटेल, प्राचार्य डायट सच्चिदानंद यादव, डीसी निर्माण रजा हसन, डीसी एमडीएम अरुण मौर्य, समस्त खंड शिक्षा अधिकारीगण व अन्य अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा द्वारा दीपावली पर्व पर दी गई बधाई

जौनपुर सू.वि. : जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा ने आगामी पर्व की बधाई देते हुए जनपद वासियों से अपील किया है कि जनपद में कुम्हारी कला कार्य एवं इसके छोटे–छोटे उद्योगों को बढ़ावा दिए जाने के लिए यह आवश्यक है कि आमजन द्वारा दीपावली पर्व पर रोशनी हेतु मिट्टी के दीपों का प्रयोग किया जाय, जिससे मिट्टी के दीपक बनाने वाले लोगों के रोजगार को बढ़ावा मिले और वे लाभान्वित हो सके साथ ही साथ वातावरण के प्रदूषण को कम किया जा सके। उन्होंने आम जनमानस से अपील करते हुए कहा है कि आप सभी अपने–अपने क्षेत्र में लोगों को जागरूक करें कि दीपावली के पर्व पर अधिक से अधिक मिट्टी से बने दीपो का प्रयोग करें और स्वदेशी को बढ़ावा देने में भागीदारी सुनिश्चित करें।

पूर्व विधायक विजय मिश्र के कुनबे पर कसता शिकंजा : प्रयागराज में भतीजों की करोड़ों की संपति कुर्क

भदोही ब्यूरो : वाराणसी की एक गायिका से दुष्कर्म, रिश्तेदार की संपत्ति हड़पने सहित कई मामलों में आरोपी ज्ञानपुर के पूर्व विधायक विजय मिश्र और उनके कुनबे पर पुलिस–प्रशासन ने एक बार फिर से बड़ी कार्रवाई की है। शनिवार को भदोही डीएम के निर्देश पर गैंगेस्टर एक्ट के तहत विजय मिश्र के भतीजों और बहू की 10 करोड़ 65 लाख की संपति कुर्क की गई। पुलिस ने यह कार्रवाई प्रयागराज के मेजा तहसील में की है। पेशेवर अपराधियों और गैंग के खिलाफ पुलिस लगातार सख्त कार्रवाई कर रही है। इसमें पूर्व विधायक विजय मिश्र और उनके गैंग पर शिकंजा लगातार कसा जा रहा है। पुलिस अधीक्षक डॉ. अनिल कुमार ने बताया कि अभियुक्त विजय कुमार मिश्र निवासी खपटिहा थाना हंडिया जनपद प्रयागराज हाल पता– कौलापुर थाना गोपीगंज ने अपराध से अर्जित धन से चांद खमरियां तहसील मेजा जनपद प्रयागराज में 12 बीघा से ज्यादा भूमि खरीदी थी। जिसे विजय मिश्र ने अपने गैंग के सक्रिय सदस्य भतीजा सतीश मिश्रा और अपनी भाभी दुर्गेश देवी, भतीजा आशीष मिश्रा, राहुल मिश्रा एवं अमित मिश्रा आदि के नाम से रजिस्ट्री कराया था। उक्त भूमि की अनुमानित लागत 10 करोड़ 65 लाख 75 हजार है। उत्तर प्रदेश गिरोहबंद एवं समाज विरोधी क्रियाकलाप अधिनियम गैंगेस्टर के तहत कार्रवाई की गई। उन्होंने बताया कि इसके पूर्व भी विजय मिश्र संग उसके कुनबे की करीब 10 करोड़ से अधिक की संपति कुर्क की जा चुकी है।

अपराधियों से पुलिस मुठभेड की जांच हेतु उप जिलाधिकारी द्वितीय नामित

जौनपुर सू.वि. : अतिरिक्त उप जिलाधिकारी द्वितीय लाल बहादुर ने अवगत कराया है कि वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जौनपुर के पत्र के अनुसार दिनांक 30.09.2022 को थाना क्षेत्र बदलापुर के अन्तर्गत वहद ग्राम देवरिया स्थित बरपुर पुल के नजदीक बाग में अपराधियों से पुलिस मुठभेड के दौरान आत्मरक्षार्थ फायरिंग में शातिर अपराधी विनोद सिंह पुत्र रणजीत सिंह निवासी छित्तम पट्टी उपराक्त (उम्र लगभग 38 वर्ष) घायल हो गया, जिसे इलाज के दौरान जिला चिकित्सालय, जौनपुर में चिकित्सक द्वारा मृत्य घोषित कर दिया गया है । वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, जौनपुर द्वारा अपने पत्र के माध्यम से मा० मानवाधिकार आयोग द्वारा निर्गत दिशा निर्देशों के अनुपालन में सम्पूर्ण प्रकरण की मजिस्टीयल जाँच कराये जाने का अनुरोध किया है । उक्त के क्रम में मजिस्टीयल जॉच हेतु जाँच अधिकारी द्वारा अपने आदेश द्वारा अतिरिक्त उप जिलाधिकारी द्वितीय को नामित किया गया है। उक्त प्रकरण की मजिस्ट्रीयल जॉच अतिरिक्त उप जिलाधिकारी द्वितीय द्वारा की जा रही है इस सम्बन्ध में सर्व साधारण को सुचित किया जाता है कि उक्त प्रकरण से सम्बधित कोई किसी को भी साक्ष्य प्रस्तुत करना हो तो मेरे न्यायालय कक्ष संख्या 16 कलेक्ट्रेट जौनपुर में एक पक्ष के अन्दर प्रस्तुत कर सकता है।

facebook YouTube WhatsApp twitter Instagram

–सुविचार–
आध्यात्मिकता में सर्व समस्याओं का समाधान निहित है।
–साभार ज्ञानामृत पत्रिका

सम्पादकीय

चीन की चालबाजियों को समझने की जरूरत

आज सवाल है कि हमने 1962 के विवाद से क्या सबक सीखे? यह कहना उचित होगा कि हां, हमने सबक सीखा। इस नजरिये का समर्थन करने के लिए कई उदाहरण हैं। मसलन, 1967 की शुरुआत में चीनियों ने नाथुला और चोला में अपनी बाहें फड़काई।

साठ साल पहले 19 और 20 अक्तूबर, 1962 की रात नेफा (नॉर्थ–ईस्ट फ्रंटियर एजेंसी–उत्तर–पूर्व सीमांत प्रदेश) में कमजोर हथियारों से लैस भारतीय जवानों को सघन चीनी हमले का सामना करना पड़ा था, जिसमें उस रात उनकी अग्रिम पंक्ति का सफाया हो गया था। इससे भी अधिक चौंकाने वाली बात यह थी कि 4–कोर के अहंकारी जीओसी लेफ्टिनेंट जनरल बिज्जी कौल, जिन्हें आमतौर पर पंडित नेहरू का आदमी माना जाता था, 'चीनियों को बाहर खदेड़ने' के लिए उन्हें सौंपी गई जिम्मेदारी के लिए एकदम अनुपयुक्त थे।

कौल नेफा में हुई इस रणनीतिक गफलत के बारे में अपने राजनीतिक आकाओं को बताने के लिए दिल्ली चले गए और फिर वापस नहीं आए, क्योंकि चीनियों ने मैकमहन लाइन के पार भारतीय चौकियों पर हमला तेज कर दिया। दिल्ली में सदमे और भ्रम का माहौल था। पंडित नेहरू और उनके सहयोगियों ने तर्क दिया कि चीन ने भारत की पीठ में छुरा भोंका है। जबकि 1950 के दशक के आखिर में माओ और कम्युनिस्ट नेतृत्व की योजनाओं को लेकर पर्याप्त चेतावनियां मिल रही थीं।

पहली बात, नेहरू द्वारा चीनी नेतृत्व को खुश करने के प्रयास के रूप में 1954 में पंचशील समझौता किया गया था, जिसके फलस्वरूप भारत ने स्वतंत्र तिब्बत के लिए की जा रही पहल से समर्थन खींच लिया, क्योंकि समझौते में तिब्बत को चीन के क्षेत्र के रूप में मान्यता दी गई थी, लेकिन तिब्बत की पारंपरिक दक्षिणी सीमाओं से परे चीन अक्साई चिन और तवांग की मैकमहन रेखा से आगे अपने दावे से पीछे नहीं हटा। 1959 में लोंगजू में हुई झड़प जैसी घटनाओं को नजरंदाज कर दिया गया।

दूसरी बात, दिल्ली न तो तिब्बत के पठार में चीन द्वारा सोवियत रूस की मदद से किए जा रहे थल और वायु सेना के जमावड़े और माओ तथा ख्रुश्चेव के बीच हुए समझौते से चेती और न ही तिब्बत में चीनी सैन्य तथा आणविक सुविधाओं से संबंधित भारतीय वायुसेना की तस्वीरों से चेती। रक्षा मंत्री कृष्ण मेनन ने इसे नजरंदाज करना पसंद किया। तीसरी बात, मार्च, 1959 में दलाई लामा के तिब्बत से भागकर (अमेरिकी मदद से) भारत आने और उनके तथा उनके अनुयायियों के भारत में मिली शरण (पहले उन सबके अमेरिका जाने की उम्मीद थी) से चीनी नेतृत्व नाराज हो गया, क्योंकि पीकिंग (बीजिंग) 1952 में तिब्बत पर चीनी कब्जे के बाद से तिब्बत से जुड़े मुद्दे को अपने आंतरिक मामले की तरह देख रहा था।

और अंत में, तेजी से आक्रामक होते पंडित नेहरू ने, जिन पर घरेलू दबाव था, एलान कर दिया कि चीन के साथ सीमाओं का निपटारा हो चुका है, चाहे नक्शा हो या न हो, और उन्होंने भारतीय सेना से कहा कि वह भारतीय क्षेत्रों से चीनियों को खदेड़ दे। उन्होंने चीनी प्रधानमंत्री चाउ एन लाई की 1960 की भारत यात्रा और सीमा संबंधी विवाद के निपटारे के उनके प्रस्ताव, जिसमें अक्साई चिन चीन के पास हो और मैकमहन लाइन के दक्षिण का क्षेत्र भारत के पास हो, की परवाह भी नहीं की।

और जब साउथ ब्लॉक ने कमजोर सैन्य सज्जा से लैस सैन्य जवानों की छोटी टुकड़ियों को हिमालय में विवादित सीमा के पार धकेला, तब कम्युनिस्ट चीन ने अपनी फॉरवर्ड पॉलिसी के तहत भारत पर हमला कर दिया और उस समय दुनिया क्यूबा के मिसाइल संकट में उलझी हुई थी। 1962 में चीनी हमले ने नेफा के मोर्चे पर भारतीय सेना को भारी नुकसान पहुंचाया। पूर्वी लद्दाख में हमारी सेना ने अपेक्षाकृत अच्छा प्रदर्शन किया और अपनी अधिकांश अग्रिम चौकियों को बचाने में सफल रही।

हमारे सैनिकों ने बहादुरी के कई असाधारण कृत्य किए, जबकि हमारे कई जनरलों ने ही उन्हें मायूस किया, सिवाय लद्दाख में लेफ्टिनेंट जनरल दौलत सिंह और बिक्रम सिंह तथा 33 कोर के उमराव सिंह जैसे अपवादों के। सीओएएस जनरल थापर और पूर्वी कमान के जीओसी लेफ्टिनेंट जनरल एलपी सेन को, जिन्होंने दिल्ली में सिविलियन के रूप में खुद को अलग कर लिया था और गड़बड़ियां होने दीं, और निश्चित रूप से लेफ्टिनेंट जनरल बिज्जी कौल को, कभी भी माफ नहीं किया जा सकता है।

न ही नेहरू के उस फैसले को भूला जा सकता है, जिसमें उन्होंने अपने खुफिया प्रमुख बीएन मलिक की सलाह पर भारतीय वायुसेना का इस्तेमाल नहीं करने का फैसला लिया था। जनरल थापर के उत्तराधिकारी जनरल जेएन चौधरी ने युद्ध के बाद नेफा में हुई पराजय को लेकर एक अध्ययन का आदेश दिया, जिसे हैंडरसन–ब्रूक्स रिपोर्ट कहा जाता है। इस रिपोर्ट में स्पष्ट तौर पर जनरलों को जिम्मेदार ठहराया गया, सिविलियन को नहीं, क्योंकि यह उनके अधिकार क्षेत्र में नहीं था।

आज सवाल है कि हमने 1962 के विवाद से क्या सबक सीखे? यह कहना उचित होगा कि हां, हमने सबक सीखा। इस नजरिये का समर्थन करने के लिए कई उदाहरण हैं। मसलन, 1967 की शुरुआत में चीनियों ने नाथुला और चोला में अपनी बाहें फड़काई। वहां तैनात जीओसी मेजर जनरल सगत सिंह ने अपने उच्च अधिकारियों को आगाह किया कि वह अपनी बाड़बंदी वाली सीमा से परे किसी भी चीनी घुसपैठ को स्वीकार नहीं करेंगे। और जब चीनी आगे बढ़े तो उन्होंने अपने सैनिकों को चीनियों पर टूट पड़ने की छूट दी, जिसमें उनके 340 जवानों की मौत हुई और संदेश गया कि भारत और बर्दाश्त नहीं करेगा।

इसके बाद चीनी बीस वर्षों तक चुप रहे और फिर 1987 में सुमदोरोंग चू में फिर घुसपैठ की। तत्कालीन सेना प्रमुख जनरल सुंदरजी ने त्वरित प्रतिक्रिया में सैनिकों को एयरलिफ्ट किया और उन्हें घेर लिया, जिससे राजीव गांधी सदमे में आ गए। इसके बाद जल्द ही चीनियों ने वापसी की और 1988 में राजीव गांधी की बीजिंग की बहुप्रचारित यात्रा हुई, जिसके बाद द्विपक्षीय राजनयिक पहल की एक शृंखला शुरू हुई।

और जैसा कि 2020 में चीनी घुसपैठ पर भारत की त्वरित प्रतिक्रिया से पता चला है कि दबाव बनाया गया तो नई दिल्ली पीछे नहीं हटेगी जैसा कि हमारे सैनिकों ने गलवां घाटी में किया था। और इस बार वायु शक्ति के उपयोग से भी इनकार नहीं किया गया। भारत–चीन विवाद का एक समाधान 1959–60 के समझौते में निहित है। चीन और भारत, दोनों जगह आज ताकतवर नेतृत्व है और वे सीमा विवाद का निपटारा कर सकते हैं और राजनीतिक रूप से सफल हो सकते हैं। क्या वे ऐसा करेंगे?

ये लेखक के अपनें विचार हैं।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ प्रकाश का पर्व दीपावली को मनायें

हरदोई(अम्बरीष कुमार सक्सेना) पिहानी पब्लिक स्कूल में दीपावली के पावन पर्व पर सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के मध्य स्कूल परिवार ने शुभकामनाएं दीं। हिन्दी में दिव्यांश सिंह तथा अंग्रेजी में मिस नेहा ने दीपावली के महत्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर रंगोली, बिना बारुद के आतिशबाजी, ड्राइंग, दीप–सजावट, डांडिया एवं शास्त्रीय नृत्य की प्रतियोगिताएं आयोजित हुईं। रंगोली में मानवी सिंह प्रथम, शताक्षी सिंह द्वितीय, दिव्यांशी तृतीय, दीप सजावट में अभिनव रस्तोगी प्रथम, फैजल द्वितीय, और लव दीक्षित तृतीय, चित्रकला प्रतियोगिता में रुखसार प्रथम, श्रवण कुमार द्वितीय, आयत तृतीय आतिशबाजी निर्माण में नियति प्रथम, निर्भय द्वितीय एवं प्रियांशी तृतीय स्थान पर रहे। कार्यक्रम का संचालन अचल ने किया। इस अवसर पर प्रबन्धक अवधेश रस्तोगी, डायरेक्टर कृष्णा रस्तोगी, एमडी डॉक्टर आशुतोष रस्तोगी,

समाजसेवी नवनीत बाजपेई समेत कई अभिभावक उपस्थित रहे। प्रिंसिपल अनिल कुमार ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

सेंट जोसेफ मिशन स्कूल के विद्यार्थियों ने रंगोली प्रतियोगिता में दिखाई प्रतिभा

गोरखपुर मण्डल प्रभारी आशुतोष चौधरी : सेंट जोसेफ मिशन स्कूल में दीपावली पर्व के उपलक्ष्य में शनिवार को रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें विद्यार्थियों ने उत्साह पूर्वक भाग लेते हुए अपने प्रतिभा का प्रदर्शन किया। रंगोली प्रतियोगिता का शुभारम्भ प्रधानाचार्य एसके जॉन ने किया। उन्होंने छात्र–छात्राओं को दीपावली पर्व की शुभकामनाएं देते हुए पर्व को सौहार्दपूर्ण मनाने की अपील की। छात्र–छात्राओं ने रंगोली प्रतियोगिता में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। रंगोली प्रतियोगिता में अपनी कला का परिचय देते हुए सभी प्रतिभागियों ने विभिन्न प्रकार की कलात्मक रंगोली बनाकर उसे रंग–बिरंगे रंगों से सजा कर अपनी सृजनात्मकता का प्रदर्शन किया।रंगोली प्रतियोगिता मे प्रथम स्थान पर दसवीं के विद्यार्थी शिवानी, शैम हाबिल, प्रियांशी त्रिपाठी, प्रियांशी यादव , वैभव, आयुष कुमार, आदित्य यादव, श्रेया मौर्या, दीक्षा पांडे रही स द्वितीय स्थान पर आठवीं के विद्यार्थी शिखर सिंह ,मनजीत चौरसिया, अभिनव यादव ,शुभम चौहान ,अभिषेक चौहान, नितेश यादव, नव्या यादव, आयुषी गुप्ता, खुशी कश्यप, रितिका, सृष्टि रही और तृतीय स्थान पर नौवीं के विद्यार्थी लाडली गुप्ता, अंशिका यादव, साक्षी पूरी, रोली यादव, श्रेया, खुशी गुप्ता , आदित्य यादव रहे ।इस अवसर पर निर्णायक की भूमिका में श्री राम

रेखा सिंह इंटर कॉलेज के अध्यापक प्रवीण श्रीवास्तव और परमेश्वरी दयाल इंटर कॉलेज कुरावल के महीप श्रीवास्तव रहे विद्यालय के बच्चों के उत्कृष्ट प्रदर्शन की सराहना की। बताया कि इस तरह के कार्यक्रमों के माध्यम से बच्चे अपनी प्रतिभा दिखाते हैं। इससे उनका चहुंमुखी विकास होता है। प्रतियोगिता का सफलतापूर्वक संचालन बिनय हाविल ने किया।इस अवसर पर पत्रकार विजेंद्र सिंह पत्रकार आशुतोष चौधरी शिक्षक अमनमणि त्रिपाठी ,अरशद निजाम ,पीएम शेख, विनय पांडे शिक्षिका हेमा प्रजापति ,निधि मौर्या ,कविता सिंह ,साधना सिंह, दीपिका ,शशी, निशु, प्रिशु, खुशबू नेहा आदि मौजूद रहे।

श्री डाल सिंह मेमोरियल स्कूल के बच्चों ने प्रदूषण मुक्त दिवाली मनाने हेतु किया अपील

हरदोई ब्यूरो अम्बरीष कुमार सक्सेना : मंगली पुरवा स्थित श्री डाल सिंह मेमोरियल स्कूल में बच्चों ने प्रदूषण मुक्त दिवाली मनाने के लिए पोस्टर बनाकर सभी से अपील की। बच्चों ने पोस्टरों के माध्यम से सभी से प्रदूषण मुक्त दिवाली मनाने के प्रति जागरूक किया। बच्चों ने कहा कि प्रत्येक वर्ष दिवाली में अत्यधिक पटाखे जलाए जाते हैं जिससे प्रदूषण अपने चरम सीमा पर पहुंच जाता है सुप्रीम कोर्ट हर बार पटाखों की खरीद पर रोक लगाते हैं लेकिन फिर भी लोग अपनी खुशी के लिए पटाखे फोड़ते हैं इसकी वजह से प्रदूषण बढ़ता है कभी–कभी पटाखे दुर्घटना का कारण भी बनते हैं पटाखे जलाकर लोग कई प्रकार की दुर्घटनाओं को निमंत्रण देते हैं। बच्चों ने अपील करते हुए कहा कि कम आवाज के तथा ग्रीन पटाखे ही छोड़े जाए। पोस्टर प्रतियोगिता में लगभग एक सैकड़ा से अधिक बच्चों ने प्रतिभाग किया जिसमें सभी बच्चों को पुरस्कृत किया गया। विद्यालय के उपप्रबंधक मुकेश सिंह ने कहा कि हम सभी को प्रदूषण मुक्त व पटाखा रहित दीवाली मनाने के लिए पूर्णतया संकल्पबद्ध होना चाहिए व आने वाले

समय को प्रदूषण मुक्त व खुशहाल बनाने का प्रयास करना चाहिए। प्रधानाचार्य लक्ष्मी देवी ने कहा क्यों ना हम ऐसी दीवाली मनाए जिसमें प्रदूषण का नामो निशान न हो। प्रबंधक अखिलेश सिंह ने सभी बच्चों को दिवाली की बधाई देते हुए विद्यालय में आयोजित होने वाली सभी प्रतियोगिता में प्रतिभाग करने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर शिक्षिका विनीता शुक्ला, कविता गुप्ता ,रोली ,मीनाक्षी, अर्पिता सिंह ,प्रियांशी आनंद, रचना प्रजापति , बीना गुप्ता, पूजा सिंह,आरती वर्मा ,सोनम शुक्ला ,नैंसी गुप्ता, सोनी ,नीलम, रेखारानी , शशिबाला, आरती, सुधा गुप्ता व शिक्षक शुभम सिंह, राम प्रकाश पांडे, संजय गुप्ता, देवेश प्रसाद सिंह ,उदय शुक्ला, भूपेश सिंह,अशोक गुप्ता आदि उपस्थित रहे।

ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन ने मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन जिला प्रशासन को सौंपा

हरदोई ब्यूरो अम्बरीष कुमार सक्सेना : शनिवार को ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन उत्तर प्रदेश इकाई जनपद के बैनर तले जनपद के कलेक्ट्रेट परिसर में ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष अखिलेश सिंह के नेतृत्व में एसोसिएशन के पदाधिकारी कलेक्ट्रेट पहुंचे जहां पर उन्होंने सिटी मजिस्ट्रेट डॉ सच्चिदानंद गुप्ता को एक ज्ञापन सौंपा। सौंपे गए ज्ञापन में प्रदेश के मुख्यमंत्री से मांग की गई है कि प्रदेश की पत्रकार मान्यता समिति में ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन को प्रतिनिधित्व का अवसर दिया जाए। एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष अखिलेश सिंह ने बताया कि प्रदेश स्तर पर गठित होने वाली पत्रकार मान्यता समिति में अभी तक संगठन को अवसर प्राप्त नहीं हुआ है जबकि यह संगठन 1986 से पंजीकृत है तथा शासन द्वारा जारी निर्देश के तहत जिला स्तर पर जिला पत्रकार स्थाई समिति के जिला अध्यक्ष के रूप में विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में सम्मिलित किया जाता है। श्री सिंह ने बताया कि प्रदेश नेतृत्व के निर्देश पर प्रदेश के सभी जनपदों में आज मुख्यमंत्री को संबोधित

ज्ञापन दिया जा रहा है जिसमें मान ना पूरी होने पर प्रदेश नेतृत्व की अगुवाई में कोर्ट का दरवाजा खटखटाया जाएगा। ज्ञापन देने वालों में प्रमुख रूप से पत्रकारों में ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन के जिला महासचिव रजनीश सिंह, सदर तहसील अध्यक्ष अजय सिंह, नगर अध्यक्ष अंकित कुमार , नगर महासचिव पीके सूरी ,हरियावा ब्लॉक अध्यक्ष अमित अवस्थी, मोनू भंडारी, कुलदीप शर्मा ,धीरज शर्मा, पप्पी श्रीवास्तव ,पंकज गुप्ता ,पुलकित शर्मा, जिला मीडिया प्रभारी नवल किशोर द्विवेदी,हिमांशु मिश्रा,ऐश्वर्मान मिश्रा चंदन,शकील खां ,अवनीश अवस्थी ,अनुज गुप्ता, ब्लाक अध्यक्ष माधैगंज राहुल गुप्ता, ब्लाक मंत्री रामकिशोर शर्मा सहित बड़ी संख्या में पत्रकार मौजूद रहे।

शिक्षा भ्रम विभ्रम को दूरकर चेतना को जागृत करती है –शिल्पी सिंह

सुल्तानपुर ब्यूरो आलोक श्रीवास्तव : राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग के अंतर्गत एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का विषय ''राष्ट्रीय एकीकरण में शिक्षा की भूमिका '' था। कार्यक्रम का प्रारंभ शिक्षाशास्त्र विभागाध्यक्ष शिल्पी सिंह और बीएड के डॉ संतोष अंश द्वारा ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी मां सरस्वती और पौरुष के प्रतीक राणा प्रताप के चित्रों पर माल्यार्पण और दीप प्रज्वलन से हुआ। संगोष्ठी में विषय रखते हुए बीएड विभाग के डॉ संतोष सिंह अंश ने कहा कि जब किसी समाज में सारे व्यक्ति किसी निर्दिष्ट भौगोलिक सीमा के अन्दर अपने पारस्परिक भेद–भावों को भुलाकर सामूहीकरण की भावना से प्रेरित होते हुए एकता के सूत्र बन्ध जाते हैं तो उसे राष्ट्र के नाम से पुकारा जाता है। राष्ट्रवादीयों का मत है दृ '' व्यक्ति राष्ट्र के लिए है राष्ट्र व्यक्ति के लिए नहीं '' इस दृष्टि से प्रत्येक व्यक्ति अपने राष्ट्र का अभिन्न अंग होता है। राष्ट्र से अलग होकर उसका कोई अस्तित्व नहीं होता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह राष्ट्र की दृढ़ता तथा अखंडता को बनाये रखने में पूर्ण सहयोग प्रदान करे एवं राष्ट्र को शक्तिशाली बनाने के लिए राष्ट्रीयता की भावना परम आवश्यक है। वस्तुस्थिति यह है कि राष्ट्रीयता एक ऐसा भाव अथवा शक्ति है जो व्यक्तियों को अपने व्यक्तिगत हितो को त्याग कर राष्ट्र कल्याण के लिए प्रेरित करती है। इस भावना की विकसित हो जाने से राष्ट्र की सभी छोटी तथा बड़ी सामाजिक इकाइयां अपनी संकुचती सीमा के उपर उठकर अपने आपको समस्त राष्ट्र का अंग समझने लगती है। शिक्षा के द्वारा राष्ट्रीयता के विकास में मदद मिलती हैं। शैक्षिक उद्देश्य, शैक्षिक पाठ्यक्रम, शैक्षिक कार्यक्रमों से एकता का विकास किया जा सकता है। मैं का त्यागकर हम की भावना से राष्ट्रीय एकता बढ़ती है। अपने स्वार्थ को दरकिनार कर राष्ट्रीय एकीकरण को बड़ाना चाहिये। संगोष्ठी में विषय रखते हुए शिक्षाशास्त्र विभागाध्यक्षा शिल्पी सिंह ने कहा कि शिक्षा एक बौद्धिक उपकरण है जो हमें जीवन और जगत–अपने और पराए के बारे में सजग कर सकती है, हमारा चेतना और विवेक का विकास कर हमें अपने तात्कालिक भ्रामक और वास्तविक लाभ–हानि के बारे में सचेत कर सकती है और हमें 'तमसो या ज्योतिर्गमय' के राह पर चलने के लिए उत्प्रेरित

कर सकती है। शिक्षा यह कैसे करती है? शिक्षा हमारे अज्ञान और भ्रमों–विभ्रमों से लड़ती है और हमारी चेतना को जागृत करती है। शिक्षा हमें उद्वेलित करती है और हमारे शारीरिक आलस्य और मानसिक निष्क्रियता को नष्ट कर सकती है। यहां हम बस यह याद रखें कि हमारा मतलब पोथी–प्रदत्त शिक्षा से नहीं है। दूसरी बात यह कि शिक्षा चरितार्थ तब ही होती है जब कहीं से ले ली जायदृकिताबों से, मीडिया से, शिक्षकों से या कहीं से भी, किसी से भी। तभी उसका कोई मतलब होता है। इस परिप्रेक्ष्य में शिक्षा हमें बता सकती है कि मनुष्य का लाभ विघटन में नहीं संगठन में है, अनेकता के साथ एकता में ही है। हमारे मनीषियों ने भी प्राचीन काल में ही कह दिया थाः यजेदेकम् कुलस्यार्थे, ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत् ग्रामम् जनपदस्यार्थे आत्मार्थे सर्वम् त्यजेत। यानी कुल के लिए एक को, ग्राम के लिए कुल को, जनपद के लिए ग्राम को और अपने लिए सबको छोड़ देना चाहिए। यहां बड़ हितों के लिए छोटे हितों के परित्याग की बात की गई है पर अपनी वैयक्तिकता के लिए सबको छोड़ देने की बात भी की गई है। शिक्षा यही कर सकती है कि वह हमें विविध तरीकों से बता सकती है कि हमारा बृहत्तर हित किस बात में है और यह भी कि हम यदि सन्मार्ग पर हों तो रवीन्द्र नाथ टैगोर की तरह 'एकला चलो रे' की राह भी अपना सकते हैं। यह काम कानून नहीं कर सकता। सरकार से असहमत लोगों को सजा देकर नहीं यानी केवल राजनीतिक रूप से यह एकता स्थापित नहीं की जा सकती। यह काम केवल सांस्कृतिक चेतना का विस्तार कर के किया जा सकता है कि राष्ट्रहित में ही सबका हित है। संगोष्ठी में बीए. तृतीय वर्ष की सौम्या गुप्ता ,कीर्ति गुप्ता, खुशबू पांडे , बीए फर्स्ट सेमेस्टर की संजना सिंह ,पूजा शर्मा ,कनीज फातमा ,आयुष मिश्रा ,गुड़िया कुमारी ,रोशनी वर्मा, हिना बानो ,आभा शर्मा आदि ने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन बीए थर्ड सेमेस्टर की मुस्कान सिंह ने किया । इस संगोष्ठी में बीए. तृतीय वर्ष ,बीए प्रथम सेमेस्टर ,बीए तृतीय सेमेस्टर के शिक्षाशास्त्र के सभी विद्यार्थी उपस्थित रहे।

लाला का पुरवा घरहांखुर्द और आदर्श नगर में स्वास्थ्य विभाग ने लगाया डेंगू संक्रमण जांच कैंप

सुल्तानपुर ब्यूरो आलोक श्रीवास्तव : डेंगू से संक्रमित मरीजों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है, स्वास्थ्य विभाग के द्वारा प्रतिदिन शहरी इलाकों में डेंगू संक्रमण की जांच के लिए कैंप लगाकर लोगों की जांचे भी की जा रही है, बावजूद इसके मरीजों की संख्या दिनों, दिन बढ़ती जा रही है, दो दिनों में स्वास्थ्य विभाग ने कैंप के माध्यम से 300 लोगों की जांच की, जिसमें 69 मरीजों में डेंगू संक्रमण पाए गए, डिप्टी सीएमओ डॉ लालजी ने बताया की लाला का पुरवा और घरहांखुर्द में वृहस्पतिवार से जांच कैंप लगाया जा रहा है, वृहस्पतिवार को लाला का पुरवा में 70 मरीजों की जांच में 16 पाजिटिव मिले, जबकि शुक्रवार को 50 मरीजों की जांच में 11 संक्रमित मरीज चिन्हित किये गये, इसी तरह वृहस्पतिवार को घरहांखुर्द में 80 लोगों की जांच में 12 पाजिटिव पाए गए, जबकि शुक्रवार को 50 मरीजों की जांच की गई जिसमें 10 मरीजों में संक्रमण के लक्षण पाए गए, डिप्टी सीएमओ डॉ लालजी ने बताया की शुक्रवार को ही आदर्श नगर वार्ड में भी डेंगू जांच कैंप लगवाकर लोगों की जांच की गई, आदर्श नगर में भी 50 लोगों की जांच की गई, जिसमें 10 संक्रमित मरीजों की संख्या रही, डिप्टी सीएमओ डॉ लालजी ने बताया की स्वास्थ्य विभाग की कई टीमें प्रतिदिन नगर क्षेत्र के वार्डों में पहुंचकर

कैंप लगाकर लोगों की जांच कर रही है, पाजिटिव मिलने पर मरीजों को चिकित्सीय परामर्श के साथ उन्हें इलाज के लिए सरकारी अस्पताल भेजा जा रहा है, दूसरी तरफ घरहांखुर्द, लाला का पुरवा और आदर्श नगर के लोगों का कहना है की स्वास्थ्य विभाग तो अपना काम कर रहा है, लेकिन नगर पालिका और मलेरिया विभाग ढूँढे नही मिल रहा है, पर्याप्त मात्रा में दवा छिड़काव व फांगिग की व्यवस्था नही की जा रही है, जिसके चलते मोहल्लों में गंदगी व्याप्त है, गंदा पानी जहा जमा है, उसकी साफ–सफाई नही हो रहा है, जिसके वजह से डेंगू धीरे, धीरे महामारी का रूप लेता जा रहा है।

दीपावली के शुभ अवसर पर जन समाज सेवा संस्था ने दैनिक जीवन की आवश्यक सामग्रियों एवं मिष्ठान का किया वितरण

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय लखनऊ। जन समाज सेवा संस्था के सदस्यों ने एकता का संदेश देते हुए झोपड़पट्टी एवं जरूरतमंद परिवारों को दीपावली की शुभकामनाएं देते हुए यह सामग्री सेंट्रल पार्क ऐशबाग पीली कॉलोनी लखनऊ, में वितरित की गई, संस्था के अध्यक्ष सरदार रनजीत सिंह ने संस्था के सभी सदस्यों का धन्यवाद करते हुए कहा कि आप सभी बहुत ही भाग्यशाली हो जो कि परमात्मा ने आपको किसी जरूरतमंद के घर में खुशी बांटने का अवसर प्रदान किया है। त्योहार हर व्यक्ति बनाना चाहता है। लेकिन कुछ परिवार ऐसे हैं जो दो समय की रोटी जुटाने में असमर्थ है। अगर हम सभी संस्था के माध्यम से किसी भी परिवार की मदद या सहायता करते हैं तो परमात्मा स्वयं यह कार्य कराता है। हम सबको परमात्मा का शुकराना करना चाहिए कि वह हम लोगों को माध्यम बनाकर जरूरतमंद लोगों की सुनता है। हर साल की

भांति इस वर्ष भी 113 परिवारों के घरों में संस्था द्वारा दीपावली का त्यौहार मनाया जाएगा। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में खालसा इंटर कॉलेज एनसीसी के छात्रों एवं सुनील कुमार अग्रवाल, रोमी वीरजी, अनेक सिंह, मनरीत सिंह, बलवंत सिंह, कृष्णा, गोल्डी वीर का महत्वपूर्ण सहयोग रहा।

बीआरसी धर्मापुर से 50 छात्र छात्राओं का दल हुआ सारनाथ वाराणसी के लिए रवाना

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : राष्टीय अविष्कार अभियान के अंतर्गत परिषदीय विद्यालयों के छात्र– छात्राओं का परिचयात्मक टूर रवाना हुआ। टूर में उपस्थित छात्र– छात्राओं को सारनाथ वाराणसी में बुद्ध मंदिर मार्क व म्यूजियम दिखाया जाएगा। ब्लॉक संसाधन केंद्र ध र्मापुर पर राष्टीय अविष्कार अभियान के अंतर्गत शुक्रवार को विज्ञान व गणित प्रतियोगिता में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाले ब्लॉक क्षेत्र के विभिन्न परिषदीय विद्यालयों से आये 50 छात्र– छात्राओं का एक परिचयात्मक टूर को वाराणसी सारनाथ के लिए रवाना किया गया। इस परिचयात्मक टूर को खण्ड शिक्षा अधिकारी धर्मापुर अरविंद यादव ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। बीईओ अरविंद यादव ने कहा कि इस परिचयात्मक टूर में 50 ऐसे छात्र– छात्राओं को शामिल किया गया है जो विज्ञान गणित की प्रतियोगिता में अधिकतम अंक प्राप्त किये है। इन छात्र– छात्राओं को पंद्रह शिक्षक व शिक्षिकाओं की निगरानी में वाराणसी के सारनाथ में गौतम बुद्ध मंदिर, म्यूजियम व पार्को को दिखाया जाएगा। इस एक दिवसीय टूर में जाने से छात्र– छात्राओं में काफी पसन्नता व उत्सुकता देखी गई। इस परिचयात्मक टूर में 50 छात्र छात्राओं के साथ खण्ड शिक्षा अधि ाकारी अरविंद यादव, एआरपी उमेश मिश्र, निशा सिंह, सुजीत श्रीवास्तव, हवलदार, विद्योतमा उपाध्याय, आशा यादव व कविता जायसवाल सहित पंद्रह शिक्षक व शिक्षिकाएं रवाना हुए।

फसल अवशेष प्रबंधन के तहत किसानों को किया गया जागरूक

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : कृषि विज्ञान केंद्र बक्शा सभागार में आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कुमारगंज अयोध या द्वारा संचालित केंद्र पर पांच दिवसीय फसल अवशेष प्रबंधन प्रशिक्षण के अंतिम दिन शुक्रवार को किसानों को जागरूक किया गया। प्रशिक्षण में कुल 25 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिभाग किया। केंद्र के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सुरेश कुमार कनौजिया ने बताया कि सभी प्रशिक्षित किसान सुजानगंज ब्लॉक के घघरिया गांव के निवासी हैं। प्रशिक्षण में किसानों को फसल की कटाई पश्चात पराली ना जलाने हेतु जागरूक किया। वैज्ञानिकों ने पराली जलाने से होने वाली हानियों की विधिवत जानकारी दी। डॉ. सुरेश ने बताया कि किसानों को समय से गेहूं बुवाई करने तथा खरपतवार प्रबंध ान की विस्तार से जानकारी दिया। कार्यक्रम आयोजक डॉ. लाल बहादुर ने किसानों को सुपर सीडर तथा मल्चर का उपयोग करने की सलाह दी। उद्यान वैज्ञानिक राजीव कुमार सिंह ने किसानों को पराली का उपयोग सब्जी की फसल व प्राकृतिक खेती करने के तरीके बताए। वैज्ञानिक डॉ. रुपेश सिंह ने किसानों को पराली के भूसे द्वारा मशरूम की खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों को जागरूक किया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सुरेंद्र प्रताप सोनकर ने किसानों को पराली से वर्मी कंपोस्ट तथा नाडेप कंपोस्ट बनाने की विधि को विस्तार से पूर्वक प्रशिक्षण दिया। कार्यक्रम समापन पश्चात किसानों को प्रमाण पत्र वितरण किया गया। इस मौके पर डॉ. अनिल कुमार, अमित सिंह सहित तमाम लोग मौजूद रहें।

दो दिवसीय नैक मूल्यांकन की प्रक्रिया : प्राविधान और एसएसआर की तैयारी विषय पर कार्यशाला आहूत

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : कुटीर पीजी कालेज चक्के मे 20 एवं 21 अक्टूबर को दो दिवसीय कार्यशाला नैक मूल्यांकन की प्रक्रिया,प्राविधान और एसएसआर की तैयारी विषय पर आहूत की गई। कार्यशाला के कुल चार सत्र रहे। उद्घाटन सत्र में मुख्य वक्ता प्रो जेपीएन मिश्र पूर्व संकायाध्यक्ष केंद्रीय विश्वविद्यालय गुजरात ने अपने संबोधन में नैक मूल्यांकन की संपूर्ण प्रक्रिया और प्राविधान एक्यूएआर,एसएसआर तैयार करने प्रक्रिया को विस्तारपूर्वक बताया।उन्होंने यह भी कहा की यदि हम संस्था को शैक्षणिक,गैरशैक्षणिक और व्यवस्थापन संदर्भ में नियमित अनुशासन के साथ व्यवहार करें और प्रत्येक व्यक्ति द्वारा अपने लिए तय कार्य का निष्पादन ईमानदारी के साथ नियत मानदंड के समीप रह कर किया जा रहा है तो मूल्यांकन में उच्च स्तर की ग्रेडिंग प्राप्त की जा सकती है। उन्होंने कहा की नैक गाइडलाइन विस्तृत एवं थारोली अध्ययन, क्राइट एरिया की बिंदुवार साक्ष्य सहित तैयारी के उपरांत एसएसआर तक की यात्रा पूरी होती है। कार्यशाला के बाकी तीन सत्र में महाविद्यालय द्वारा नामित सात क्राइट एरिया के संयोजक,नैक संयोजक और आईक्यूएसी संयोजक ने अलग अलग अपना पावर प्वाइंट प्रस्तुतिकरण दिया,जिसपर एक्सपर्ट द्वारा ओपिनियन ली गई। कार्यशाला के में प्रारंभिक उद्बोधन देते हुवे प्रबंधक डॉ अजयेंद्र कुमार दुबे ने कहा की सतत प्रयास ही हमे द्वितीय चक्र के मूल्यांकन के लिए तैयार कर सकता है। कार्यशाला की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुवे प्राचार्य डॉ रमेश मणि ने कहा की सत्र से निष्कर्षित परिणाम पर आपकी क्रियाशीलता में संसाधन की सुलभता की कमी नहीं होगी। कार्यशाला का सारांश क्रमशः डॉ राघवेंद्र और डॉ अमरेज ने किया।कार्यशाला के अंत में असिस्टेंट प्रोफेसर वाचस्पति ने उपलब्धियों और निष्कर्ष का विवरण प्रस्तुत किया। संचालन डॉ अनुज ने किया।

आशीष श्रीवास्तव को पी सी एस बनने पर संगत पंगत ने किया सम्मानित

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : बेसिक शिक्षा जौनपुर के पूर्व डी सी श्री आशीष कुमार श्रीवास्तव को पी सी एस 2021 में चयन पर पर आज संगत पंगत जौनपुर द्वारा एक सादे स्वागत समारोह में स्मृति चिन्ह अंगवस्त्र भेट कर जोरदार माल्यार्पण कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संगत पंगत के जिलाध यक्ष पंकज श्रीवास्तव हैप्पी ने किया संचालन जिला महामंत्री सुलभ श्रीवास्तव ने किया। स्वागत समारोह को संबोधित करते हुए संगत पंगत के संरक्षक संतोष कुमार श्रीवास्तव वरिष्ठ अधिवक्ता क्रिमिनल ने कहा कि आज कायस्थ समाज के बच्चो को शिक्षा के क्षेत्र में आगे आने की जरूरत है तभी रोजी रोजगार मिलेगा उन्होंने कहा कि आशीष जी नौकरी करते हुए भी एक सफलता प्राप्त कर समाज का नाम रोशन किया। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया संघ के पूर्व अध्यक्ष व वरिष्ठ पत्रकार राजेश श्रीवास्तव गुलगुल भइया ने कहा कि आशीष जी ने जौनपुर का नाम देश प्रदेश में रोशन किया जो गर्व की बात है आशीष जी सुरु से ही दीनदुखियों की मदद व सेवा करते थे आज उन्हीं दुवाओ का फल प्राप्त हुआ है संगत पंगत के प्रदेश सहसंयोजक राजेश श्रीवास्तव बच्चा भइया एडवोकेट ने कहा कि आशीष जी के पी सी एस बनने से समाज गौरवान्वित महसूस कर रहा है इनसे प्रेरणा लेकर लोग आगे आएंगे। जिलाध्यक्ष संगत पंगत पंकज श्रीवास्तव हैप्पी ने कहा कि संगत पंगत समाज के सुखदुःख का साथी हैं आज अपने बीच के आशीष जी को सम्मानित करने पर गर्व महसूस हो रहा है। अपने स्वागत से अभिभूत नवनियुक्त पी सी एस अधिकारी आशीष कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि देश व समाज की सेवा ईमानदारी पूर्वक करूँगा जिस भी क्षेत्र में शासन जिम्मेदारी सौपेगी उसे निष्ठापूर्वक पूरा करने का प्रयास करूंगा । कार्यक्रम संयोजक व संगत पंगत के

जिला उपाध्यक्ष अजय श्रीवास्तव अज्जू ने कहा कि आशीष भइया खूब प्रगति करे व मुहल्ले व नगर का नाम देश भर में रोशन करे यही कामना है उक्त अवशर पर संगत पंगत के संरक्षकगण ,वरिष्ठ उपाध्यक्ष शरद श्रीवास्तव, अमित श्रीवास्तव, संदीप श्रीवास्तव पत्रकार, संजय श्रीवास्तव एडवोकेट ।क्ळ६,संतोष श्रीवास्तव एडवोकेट कलेक्ट्रेट,प्रशांत पंकज श्रीवास्तव वरिष्ठ अधिवक्ता, दीपक श्रीवास्तव पत्रकार वरिष्ठ अध्यक्ष संगत पंगत राकेश श्रीवास्तव,डॉ विवेक श्रीवास्तव, मनीष श्रीवास्तव,गोल्डी श्रीवास्तव,सन्नी श्रीवास्तव, अनीश श्रीवास्तव, अंकित श्रीवास्तव, अजीत अस्थाना, वैभव श्रीवास्तव, अनुराग श्रीवास्तव,विकास श्रीवास्तव,भाजपा नेता दीपक मिश्रा दीपू, समाजसेवी सुनील कुमार मिश्रा आदि सैकड़ों लोगों ने भाग लिया।

सड़क दुर्घटना में युवक की मौत : शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हेतु पुलिस ने भेजा

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : जौनपुर रायबरेली हाई वे पर सिकरारा थाना क्षेत्र के डमरूआ मोड़ पर बोलेरो के धक्के से साइकिल सवार घायल हो गया और मौके पर ही उसकी मौत हो गई। मछलीशहर कोतवाली क्षेत्र के घघरिया (राम नगर श्रीपुर)निवासी 25 वर्षीय दिनेश विन्द पुत्र पन्ना लाल बिंद शनिवार को दोपहर साइकिल से सिकरारा की तरफ जा रहा था।जैसे ही वह डमरुआ मोड़ पर पहुंचा ही था कि विपरीत दिशा से तेज रफ्तार से आ रही बोलेरो से जोरदार टक्कर हो गई।साइकिल सवार गम्भीर रुप से घायल हो गया।स्थानीय लोंगो के सहयोग से एम्बुलेंस से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मछलीशहर लाया गया।जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया।बोलेरो चालक वाहन सहित फरार हो गया।सूचना पाकर मौके पर पहुंची सिकरारा थाने की पुलिस शव को कब्जे में लेकर पोस्ट मार्टम के लिये भेज दिया।मौत की सूचना पाते ही परिजनों में कोहराम मच गया।थानाध्यक्ष सिकरारा विवेक तिवारी ने बताया कि उक्त घटना में वाहन चालक गाड़ी समेत फरार हो गया है।जिसका पता किया जा रहा है।शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है।

निपुण लक्ष्य प्राप्त बच्चे हुए सम्मानित : ब्लॉक शाहगंज में हो रहे अनूठे प्रयोग

जौनपुर डीकेयू ब्यूरो : जनपद के शाहगंज ब्लाक अंतर्गत न्याय पंचायत खलीलपुर के प्राथमिक विद्यालय धौरइल में निपुण लक्ष्य प्राप्त नौनिहालों सम्मानित किया गया। लक्ष्य प्राप्त बच्चों के मुकुट आदि प्रतीक बहुत ही आकर्षक लग रहे थे, बच्चों ने अपने हाथ में अपने नाम और कक्षा की तख्ती

ले रखी थीस एक रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। जिसमें प्रथम द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे बच्चों को प्रदेश मंत्री ए आर पी एसोसिएशन एवं वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्राथमिक शिक्षक संघ शाहगंज, प्रशांत मिश्र के द्वारा पुरस्कृत प्रेरित किया गया। श्री मिश्र ने बताया की जनपद में ऊर्जावान जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी डॉक्टर गोरखनाथ पटेल एवं ब्लॉक में खंड शिक्षा अधिकारी जयसवाल के कुशल नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में हमारी पूरी ए आर पी टीम, शिक्षक संकुल , प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों से समन्वय स्थापित कर ब्लॉक शाहगंज को निपुण ब्लॉक बनाने हेतु कृत संकल्पित हैं। उपस्थित अभिभावकों में उत्साह देखा गया, उन्हें भी निपुण लक्ष्य के बारे में बताया गया। सहायक अध्यापक जितेंद्र, धर्मेंद्र, महेंद्र, ज्ञानमती एवं नीरज, मंजू, कुसुम ,मनोज ,साहब लाल आदि अभिभावक उपस्थित रहे।

तालाब में मिला नवजात शिशु का शव

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : क्षेत्र के अरूवा ग्राम सभा में शुक्रवार को सुबह गांव के ही समीप एक तालाब में करीब दो महीने की एक नवजात शिशु का शव मिला। तालाब में शिशु के तैरते शव को देखकर ग्रामीण लोग एकत्र हो गए और इसकी सूचना थाने पर दी मौके पर पहुंची पुलिस आवश्यक कार्यवाही में लग गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार शुक्रवार की सुबह जब ग्रामीण टहलने निकले तो अरूवा से बराई जाने वाली सड़क के किनारे बने तालाब में एक नवजात शिशु का शव देखा ।धीरे धीरे काफी ग्रामीण वहा इकट्ठा हो गए और इसकी सूचना थाने पर दी मौके पर पहुंची पुलिस शव को लेकर थाने आई ।थाना प्रभारी सुरेश कुमार सिंह ने कहा की शिशु करीब एक माह की बालिका है ।उसके शव को तालाब से निकालकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है।

अटेवा ने सदस्यता अभियान चलाकर दर्जनों कर्मचारियों को बनाया सदस्य

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : जिले के खुटहन में अटेवा द्वारा सदस्यता अभियान चलाकर दर्जनों कर्मचारियों को सदस्य बनाया सदस्यता अभियान के दौरान ब्लॉक अध्यक्ष डॉ.हरे कृष्ण सिंह व महामंत्री हौसला प्रसाद

यादव,प्रमोद यादव तथा विनय वर्मा के नेतृत्व में यह सदस्यता अभियान खुटहन बीआरसी पर चलाया गया,जिसमें अधिक से अधिक शिक्षकों और कर्मचारियों ने अटेवा की सदस्यता ली और सभी बड़े उत्साहित नजर आ रहे थे। अटेवा द्वारा चलाया जा रहा है पुरानी पेंशन बहाली की मांग को लेकर कर्मचारियों के द्वारा बराबर आवाज उठाया जा रहा है इस दौरान पदाधि ाकारियों ने सदस्यता अभियान को संबोधित करते हुए विनय वर्मा ने बताया राजस्थान ,छत्तीसगढ़,झारखंड और अब पुरानी पेंशन पंजाब में भी बहाल हो गई है और उत्तर प्रदेश में भी पुरानी पेंशन बहाल होनी चाहिए।इसी क्रम में प्रमोद कुमार यादव ने बताया कि बुढ़ापे में पुरानी पेंशन की आवश्यकता को बताया इस अवसर पर सनी,इंद्रेश,सत्य प्रकाश मिश्रा,देशबंधु गौतम, अजय,सरिता मौर्य,कल्पना पटेल, समीक्षा,अमरजोत आदि उपस्थित रहे।

ट्रक की चपेट में आने से साइकिल सवार पीआरडी जवान की मौत : दूसरा घायल

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : चंदवक थाना क्षेत्र के आजमगढ़ वाराणसी मार्ग पर खुज्झी नाले के पास शुक्रवार रात ड्यूटी के दौरान ट्रक की चपेट में आने से साइकिल सवार पीआरडी जवान की जहां मौत हो गई वहीं दूसरा घायल हो गया।घटना के बाद ट्रक लेकर चालक फरार हो गया।सूचना पर पहुंची पुलिस शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।घायल पीआरडी जवान का इलाज सीएचसी में कराया गया। चंदवक थाने पर तैनात पीआरडी जवान क्षेत्र के बोड़सर खुर्द निवासी राम जनम राजभर (50) व तराव निवासी शिवेंद्र गोड़(53) की ड्यूटी कर्रा कॉलेज व तराव मोड़ पर लगाई गई थीं।दोनों अपनी अपनी साइकिल से ड्यूटी के लिए रात में जा रहे थे।खुज्झी नाले के पास पहुंचे ही थे कि वाराणसी से आजमगढ़ जा रहीं ट्रक पीछे से टक्कर मार दी जिससे राम जनम सड़क पर गिरा व ट्रक के पहिए के नीचे आ गया वहीं शिवेन्द्र खाई में जा गिरा।घटना के बाद ट्रक लेकर चालक फरार हो गया।सूचना पर पहुंची पुलिस दोनों को सीएचसी लायीं जहां रामजनम को डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया।घायल शिवेन्द्र का इलाज चल रहा है।पुलिस शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज कर आवश्यक कार्रवाई कर रही है।

एयरपोर्ट से घर जा रहे चालक की ह्रदयाघात से मौत

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : बाबतपुर एयरपोर्ट से शुक्रवार देर शाम वैगनआर निजी वाहन से अपने घर देवरिया जाते समय चंदवक पेट्रोल पंप के सामने ह्रदयाघात से चालक की मौत हो गई। सूचना पर पहुंची चंदवक पुलिस परिजनों को सूचित कर शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। चालक नित्यानंद यादव कक्कू (43)पुत्र मुखलाल यादव निवासी घटैला चेती थाना बरियारपुर, देवरिया बाबतपुर एयरपोर्ट से अपने परिचित को वैगनआर वाहन से लेकर घर जा रहा था कि चंदवक पेट्रोल पंप के पास बेचौनी महसूस हुई।आनन फानन में उसे सीएचसी ले जाया गया जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया।सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

अपराधी तारीफ करें तब भी एक्शन नहीं थमेगा : अतीक ने की थी योगी की तारीफ

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : प्रयागराज में पेशी के दौरान माफिया अतीक अहमद ने योगी आदित्यनाथ को ईमानदार और बहादुर बताया था। पुर्वांचल विश्वविद्यालय में पहुंचे डिप्टी सीएम केशव मौर्य ने कहा कि अपराधियों के तारीफ करने के बावजूद एक्शन नहीं थमेगा। अपराधी सिर्फ अपराधी होते हैं। सूबे में अपराधि ायों के खिलाफ चलने वाला अभियान लगातार जारी रहेगा।पुलिस स्मृति दिवस पर पुलिसकर्मियों को दी बधाई उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि आज पुलिस स्मृति दिवस भी है। उत्तर प्रदेश को सुरक्षित बनाने में पुलिस का अहम रोल है। उन्होंने उत्तर प्रदेश के सभी पुलिस कर्मियों को बधाई देते हुए कहा कि पुलिस कर्मियों के सहयोग से उत्तर प्रदेश एक सुरक्षित स्थान बना हुआ है। उन्होंने कहा कि अपराधियों के खिलाफ अभियान चलाने में कोई भी कसर नहीं छोड़ी जाएगी। जो अपराधी तारीफ कर रहे हैं उनके खिलाफ भी कानून के नियम लागू होते हैं। पूर्वांचल विश्वविद्यालय के भवन का उद्घाटन किया शुक्रवार की दोपहर 1:40 मिनट पर डिप्टी सीएम केशव मौर्य पूर्वांचल विश्वविद्यालय में रज्जू भैया भौतिक संस्थान और अशोक सिंघल परंपरागत विज्ञान के भवन के उद्घाटन के लिए आए हुए थे। पूर्वांचल विश्वविद्यालय परिसर के एकलव्य स्टेडियम में हेलीपैड से उतरने के बाद उन्होंने वीर बहादुर सिंह की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। मीडिया से बातचीत के दौरान उन्होंने बताया कि अपराधियों के खिलाफ अभियान बदस्तूर जारी रहेगा। अतीक अहमद द्वारा दिए गए बयान पर उन्होंने कहा कि तारीफ करने से किसी भी अपराधी के खिलाफ कार्यवाही नहीं रुकेगी। बनेगी ट्रिपल इंजन की सरकार आगामी नगर निकाय चुनाव को लेकर डिप्टी सीएम केशव मौर्य ने बताया कि प्रदेश में अब ट्रिपल इंजन की सरकार बनने जा रही। केंद्र और प्रदेश में भाजपा की सरकार है। निकाय चुनाव में भी भारी बहुमत से भाजपा सीट जीतने जा रही है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में हर सीट पर कमल खिलेगा।

दरोगा को गाली देते हुए दीवान का वीडियो हुआ वायरल : क्षेत्राधिकारी ने कहा पुराना है मामला

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : रामपुर थाना परिसर में थाने पर ही तैनात एक दीवान द्वारा दारोगा को गाली देने का वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है जानकारी के अनुसार रामपुर थाने पर राजेश यादव हेड मुहर्रिर के पद पर हैं जो विगत कई सालों से रामपुर में ही तैनात हैं पिछले कुछ दिनों से सोशल मीडिया पर इन्हीं दीवान द्वारा अपने दारोगा को गाली दिए जाने का वीडियो बहुत तेजी से वायरल हो रहा है इस वीडियो में दीवान गेरुआ वस्त्र धारण किए हुए थाना परिसर में कुछ सिपाहियों के साथ बात करने के दौरान अपने सीनियर दारोगा को अपशब्द कहते नजर आ रहे हैं इस सम्बंध में सी ओ मड़ियाहूं अशोक सिंह ने बताया कि वायरल वीडियो छ महीने पुराना है पुराने थानाध्यक्ष से सम्बंधित आपसी बात थी।

ब्लाक स्तरीय संगोष्ठी व उन्मुखीकरण कार्यक्रम का हुआ आयोजन

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा संचालित विभिन्न कार्यक्रम योजनाओं को लेकर क्षेत्र के इन्दिरा स्मारक सर्वोदय इण्टर कालेज कटघर में शनिवार को ब्लाक स्तरीय संगोष्ठी व उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।खण्ड शिक्षा अधिकारी राजेश कुमार वैश्य के नेतृत्व में विभिन्न योजनाओं डीबीटी,दीक्षा एप,आपरेशन कायाकल्प व निपुण भारत मिशन आदि को लेकर विधिवत चर्चा की गयी।मुख्य अतिथि प्रमुख प्रतिनिधि ा डॉ.उमेश चन्द्र तिवारी ने योजनाओं को लेकर सरकार के नीतियों को स्पष्ट किया।कार्यक्रम गतिविधियों में छात्र छात्राओं, अभिभावको और सामुदायिक सहभागिता पर बल दिया गया।अभी तक आपरेशन कायाकल्प योजना में अपेक्षित भूमिका निभाने वाले क्षेत्र के बुमकहां, शाहमऊ, कोहड़ा, अरसिया व खानपुर के वर्तमान प्रधानों को सम्मानित किया गया।इस दौरान खण्ड विकास अधिकारी सर्वेश मोहन,सतीश सिंह,पंकज सिंह,सुधाकर सिंह व राकेश कुमार समेत दर्जनों प्रधानाध्यापक और प्रधानगण मौजूद रहे।कार्यक्रम का संचालन अजय मिश्रा ने किया।

सेवानिवृत्त बन दरोगा की सड़क दुर्घटना में मौत

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : बक्शा थाना क्षेत्र के महिमापुर डीह गांव के समीप साइकिल से बाजार जा रहें सेवानिवृत्त बन दारोगा की अज्ञात बोलेरो चालक जोरदार धक्का मारकर फरार हो गया। सूचना पर पहुँची पुलिस एवं स्थानीय लोगों की मदद से गम्भीर रूप से घायल को जिला अस्पताल भेजा गया जहां इलाज के दौरान मौत हो गई। थाना क्षेत्र के महिमापुर डीह गांव निवासी 70 वर्षीय कैलाश मौर्या शनिवार सुबह घर से हाइवे होते हुए नौपेड़वा जा रहें थे। उसी दौरान तेजगति से जा रही बोलेरो की चपेट में आ जाने से गम्भीर रूप से घायल हो गए। घायल को बक्शा नौपेड़वा सीएचसी अस्पताल भेजा गया जहां चिकित्सकों ने स्थिति गम्भीर देख जिला अस्पताल रिफर कर दिया। घायल की उपचार के दौरान मौत हो गई। पुलिस ने शव को पीएम हेतु भेज दिया।

बालिकाओं को खेल के प्रति प्रोत्साहित करने हेतु बालिबाल प्रतियोगिता का आयोजन

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : क्षेत्र के ग्रामीण स्टेडियम वनपुरवा में दुखना देवी सेवा संस्थान सितमसराय द्वारा बालिकाओं को खेलकूद के प्रति प्रोत्साहित करने के लिए बालिका बालीबाल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है।संस्थान के प्रबंधक डा अवधनाथ पाल ने शनिवार को प्रतियोगिता में भाग लेने वाले विद्यालय के गेम टिचरो को खेल किट वितरित किया। लीग मैच में किस विद्यालय की टीम किस विद्यालय से खेलेगी उसका चार्ट तैयार किया गया। 3 से 13 नवंबर तक चलने वाली प्रतियोगिता में ऑक्सफोर्ड पब्लिक स्कूल फूलपुर वाराणसी, सत्येंद्र बहादुर इंटर कॉलेज खर्गसेनपुर, हरगोविंद इंटर कॉलेज जफराबाद, राम रूप सर्वोदय इंटर कॉलेज भवनाथपुर, कुटीर इंटर कॉलेज चक्के, अवध इंटरनेशनल अकादमी सितम सराय, चिल्ड्रन गाइड स्कूल मड़ियाहूं, खर्गसेनपुर इंटर कॉलेज, चंद्रभान इंटरनेशनल अकादमी त्रिलोचन, पब्लिक इंटर कॉलेज केराकत, सरस्वती शिक्षा निकेतन सिरकोनी, सेंट जेवियर इंटर कॉलेज मड़ियाहूं, राजकीय बालिका इंटर कॉलेज मड़ियाहूं, पंडित प्रभाकर मिश्र इंटर कॉलेज, आदर्श इंटर कॉलेज इटाये की बालिका टीम भाग ले रही है।इस मौके पर वीरेंद्र पाल, गिरजा शंकर सिंह, डॉ राजेंद्र यादव, अनिल दुबे, शेषनाथ मिश्र, डॉ लीलावती पाल, शिरम शाह, अंकिता मौर्य, शशि राव, रंजना आर्या, शैलेश कुमार यादव, अर्जुन पाल आदि मौजूद रहे।

मशरूम उत्पादन तकनीकी प्रशिक्षण पश्चात दिया गया प्रमाणपत्र

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : कृषि विज्ञान केंद्र बक्शा पर शनिवार को मशरूम उत्पादन तकनीकी प्रशिक्षण पश्चात किसानों को प्रमाणपत्र प्रदान किया गया। प्रशिक्षण में मौजूद जनपद के 25 किसानों ने प्रतिभाग किया। प्रशिक्षणार्थियों को रबी सत्र के लिए गेहूं का निःशुल्क बीज भी वितरित किया गया। कीट वैज्ञानिक डॉ. रूपेश सिंह ने ढिंगरी मशरूम का उत्पादन प्रशिक्षण एवं उसके रोग एवं कीट के उचित प्रबंधन के बारे में किसानों को विस्तार से जानकारी दी। केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ. सुरेश कुमार कन्नौजिया ने किसानों को मशरूम की विभिन्न प्रजातियों के उत्पादन की विधियां बताते हुए प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। प्रशिक्षण में डॉ. राजीव कुमार सिंह, डॉ. लालबहादुर गौड़, डॉ. हरिओम वर्मा एवं गृह विज्ञान वैज्ञानिक डॉ. ममता आर्य ने किसानों को मशरूम उत्पादन एवं उसके व्यवसायिक उपयोग के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

गोदान एक्सप्रेस के पहिए में धुआं निकलने से हड़कंप : खेतासराय स्टेशन पर मरम्मत के बाद रवाना हुई ट्रेन

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : शनिवार की दोपहर मुम्बई से गोरखपुर जा रही गोदान एक्सप्रेस के गार्ड के डिब्बे के पहिए से धुआं निकलने की सुचना से रेल विभाग में हड़कंप मच गया। खेतासराय स्टेशन पर आध ाा घंटा ट्रेन रोक कर पहिए की मरम्मत के बाद ट्रेन को आगे के लिऐ रवाना किया गया। जानकारी के अनुसार 11055 अप लोक मान्य तिलक मुम्बई गोरखपुर एक्सप्रेस दोपहर 2 बजे मिहरावा स्टेशन से गुजर रही थी तभी स्टेशन के गेट मैन द्वारा ट्रेन के गार्ड के एस एल आर कोच के पहिए से ध ुंआ निकलते देखा तो गेटमैन ने मिहरावां स्टेशन मास्टर को सूचना दी। मिहरावा स्टेशन मास्टर ने यह सूचना खेतासराय स्टेशन मास्टर को दी। मानी हाल्ट पर तैनात गेट मैन ने भी इसकी पुष्टि की तो ट्रेन को खेतासराय रेलवे स्टेशन पर ट्रेन स्टापेज न होते हुए भी रोकने का फैसला किया गया। खेतासराय स्टेशन पर ट्रेन आधा घंटा 14/06 बजे से 14/40 बजे

तक रुकी रही । रेल कर्मियो द्वारा कोच का ब्रेक ठीक किया गया तब जा कर ट्रैन शाहगंज के लिए रवाना हुई।खेतासराय रेलवे स्टेशन अधीक्षक एच एम मीना ने बताया गोदान एक्सप्रेस ट्रेन के एस एल आर कोच के पहिए जाम हो गए थे। इस कारण धुआं निकल रहा था । खेतासराय स्टेशन पर ट्रेन रोक कर इसे ठीक करने के बाद रवाना कर दिया गया।

बाजारों पर बरसेगी मां लक्ष्मी की कृपा : 15 करोड़ के तो सिर्फ बरतन ही बिकने का अनुमान

लखनऊ ब्यूरो : दीपोत्सव की शुरुआत शनिवार से होगी। धनतेरस 22 और 23 अक्तूबर को दोनों दिन मनाने, शनिवार को सामान की खरीदारी को लेकर तमाम चर्चाओं के बीच बाजार ग्राहकों की अगवानी के लिए तैयार हैं। उम्मीद के मुताबिक, मां लक्ष्मी का आशीर्वाद बरसेगा, इसे लेकर कारोबारी खुश हैं और ग्राहक अपने बटुए लेकर तैयार हैं। चौक, आलमबाग, अमीनाबाद, महानगर, भूतनाथ, गोमतीनगर सराफा बाजार बिक्री को लेकर बहुत ज्यादा आश्वस्त है। कारोबारियों का कहना है कि 3000 की अंगूठी लेना हो या तीन लाख का हार, धनतेरस पर सोने–चांदी की खरीदारी की परंपरा सदियों से चली आ रही है। शुक्रवार को 22 कैरेट के सोने का दाम 47100 रुपये रहा। कारोबारियों के मुताबिक, इसमें 1700 रुपये की कमी बीते महीने में आई है। कुछ इसके चलते भी ग्राहक सराफा बाजार की ओर मुड़ा है। वहीं, ऑटोमोबाइल सेक्टर भी बीती विलंबित चल रही बुकिंग की डिलीवरी के कारण अच्छी बढ़त की ओर आगे बढ़ रहा है। इलेक्ट्रॉनिक, इलेक्ट्रिकल्स बाजार हो या पूजा के सामानों की बिक्री, नए डिजाइन, नई तकनीक की उपलब्धता के चलते ग्राहकों के आकर्षित होने की संभावना बहुत बढ़ गई है। एक रिपोर्ट धनतेरस के लिए तैयार बाजार पर। आचार्य राधेश्याम शास्त्री का कहना है कि धनतेरस 22 को तो भगवान धनवंतरि की जयंती 23 अक्तूबर को मनाना श्रेष्ठ होगा। दरअसल, भगवान धनवंतरि का जन्म त्रयोदशी और चतुर्दशी के संयोग से प्रदोष काल में हुआ था। यह विशिष्ट समय 23 को शाम 5:31 से 8:03 मिनट तक मिल रहा है। 50 फीसदी आज और शेष खरीदारी कल लखनऊ सराफा एसोसिएशन के अध्यक्ष व उत्तर प्रदेश सराफा एसोसिएशन के महामंत्री रवीन्द्र नाथ रस्तोगी कहते हैं कि 50 फीसदी कारोबार शनिवार को और शेष रविवार को होगा। उदयातिथि को मानने वाले रविवार को खरीदारी करेंगे। सराफा बाजार को 1500 करोड़ रुपये की बिक्री की उम्मीद है। इसमें से 20 फीसदी चांदी की बिक्री और 80 फीसदी में सोने व हीरे की बिक्री शामिल है। सराफा एसो. चौक के उपाध्यक्ष आदिश जैन कहते हैं कि बिक्री के रिकॉर्ड टूटेंगे। 15 फीसदी तक बढ़ोतरी तो कहीं नहीं गई। गिन्नियों की कीमत में सोने के गणेश लक्ष्मी एक से 8 ग्राम तक की सोने की गिन्नियां उपलब्ध हैं। हालांकि, जुगल किशोर ज्वैलर्स के राघव रस्तोगी कहते हैं कि जो गिन्नियां लेते हैं, उनके लिए इसी कीमत में सोने के लक्ष्मी–गणेश खरीदने का अच्छा विकल्प है। इन्हें 50 हजार रुपये से सवा लाख तक में खरीदा जा सकता है। उपलब्ध तो 15 लाख रुपये तक के गणेश लक्ष्मी हैं, लेकिन ज्यादा मांग सवा लाख तक की है। 3000 रुपये से 30 लाख रुपये तक के सामान राघव रस्तोगी कहते हैं कि सोने के जेवरों की शुरुआत 3000 रुपये से, चांदी के सामान की कीमत 300 रुपये और हीरे के जेवर 8000 रुपये से शुरू हैं। रवीन्द्र नाथ रस्तोगी कहते हैं कि हल्के वजन वाले जेवर, चेन, चूड़ी, अंगूठी, झाले आदि की खरीदारी खूब होती है। आदिश जैन बताते हैं कि 12500 से लेकर तीन लाख तक के हल्के वजन वाले सेट भी खूब पसंद किए जाते

हैं। 2.5 लाख की हनुमान जी की मूर्ति महानगर स्थित सराफा कारोबारी शालिनी अग्रवाल कहती हैं कि गिफ्ट लेन–देन में मूर्तियां खूब खरीदी जाती हैं। 2.5 लाख रुपये की हनुमान जी की मूर्ति विशेष आर्डर पर तैयार हुई है। 650 से 920 रुपये तक का चांदी का सिक्का सराफा कारोबारी रवींद्र नाथ रस्तोगी बताते हैं कि 100 फीसदी शुद्ध चांदी के 10 ग्राम के सिक्के की कीमत 650 रुपये है। 50 ग्राम का 2000 रुपये का है। पुराने सिक्के बहुत कम उपलब्ध हैं। आदिश जैन कहते हैं कि एंटीक सिक्का 920 रुपये और उसकी प्रतिकृति 600 से 700 रुपये के बीच है। वाहन बाजार भी होगा मालामाल टू–व्हीलर कारोबार से जुड़े आनंद कुमार सिंह बताते हैं कि धनतेरस से दीवाली तक में 10 हजार दो पहिया वाहनों की बिक्री का अनुमान है। ऑटोमोबाइल उद्योग से जुड़े कारोबारियों का कहना है कि सितंबर में 3400 गाड़ियों की बिक्री लखनऊ क्लस्टर में हुई है। अक्तूबर में यह संख्या दोगुनी होने का अनुमान है। इस लिहाज से चार पहिया वाहन का बाजार पांच से छह करोड़ और दो पहिया का 70 से 80 करोड़ का हो सकता है। मोबाइल फोन बाजार की भी बल्ले–बल्ले ऑल इंडिया मोबाइल रिटेलर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष नीरज जौहर बताते हैं कि एक लाख 80 हजार का एप्पल का मोबाइल बाजार में है नहीं। ऐसे में एक लाख 55 हजार के सैमसंग मोबाइल का क्रेज बना हुआ है। बीते वर्षों में कीमतें बढ़ी हैं, इस कारण कुल कारोबार बढ़ता दिखेगा। धनतेरस पर लगभग 25 करोड़ की बिक्री का अनुमान है। चूंकि मोबाइल फोन की खरीदारी भैया दूज तक चलती है, इसलिए बाजार के 50 करोड़ तक पहुंचने का अनुमान है। इलेक्ट्रॉनिक्स व इलेक्ट्रिकल्स का बाजार भी उत्साहित कारोबारी दिनेश जैन कहते हैं कि इस बार प्री बुकिंग में कमी आई है। त्योहारी सीजन में फ्रिज, टीवी, चिमनी, डिश वॉशर, वाशिंग मशीन आदि की मांग रहती है। ऑनलाइन कारोबार के कारण ऑफलाइन कारोबार प्रभावित हुआ है, फिर भी कारोबार बढ़ोतरी पर बंद होगा। बाजार में 17 लाख तक के टेलीविजन उपलब्ध हैं। इस बार एलईडी की बिक्री में कमी आई है। इसके अलावा लैपटॉप–कम्प्यूटर बाजार भी तेज है। इसमें भी 10–20 फीसदी की वृद्धि होगी। नाका व्यापार मंडल के अध्यक्ष सतपाल सिंह मीत कहते हैं कि रोशनी के त्योहार में बिना झालर जगमगाहट अधूरी है। धनतेरस से दीपावली तक खरीदारी चलती है, फिर भी 70 फीसदी खरीदारी धनतेरस पर हो जाती है। इस लिहाज से 100 से 150 करोड़ के बीच कारोबार की उम्मीद है। बर्तन खरीद पर खर्च होंगे 15 करोड़ धनतेरस पर बर्तन खरीदने की परंपरा का निर्वहन सदियों से होता चला आ रहा है। लखनऊ मेटल मर्चेंट एसोसिएशन केअध्यक्ष हरिश्चंद्र अग्रवाल कहते हैं कि पुराने बर्तनों को निकाल नए बर्तन लेने का रिवाज जारी है। स्टील के साथ–साथ पीतल व तांबे के बर्तनों को पसंद किया जा रहा है। इस वक्त मुस्लिम समुदाय की सहालग चल रही है। बाजार का दोहरा फायदा है। उम्मीद है कि 15 करोड़ से अधिक की बिक्री होगी।

सीएम योगी ने ट्विटर पर लगाई दीपोत्सव की डीपी : लोगों को किया आमंत्रित

लखनऊ ब्यूरो : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेशवासियों को अयोध्या में हो रहे दीपोत्सव के लिए आमंत्रित किया है। उन्होंने ट्विटर पर दीपोत्सव 2022 के लोगो की डीपी (डिस्प्ले पिक्चर) लगाई है। इसके साथ ही यूपी सरकार के सभी ट्विटर अकाउंट पर दीपोत्सव का लोगो प्रदर्शित होने लगा है। मुख्यमंत्री योगी ने ट्वीट कर कहा कि श्री अयोध्या जी तैयार हैं, भव्य और दिव्य दीपोत्सव के लिए... आप सभी का स्वागत है। जय श्री राम! श्री अयोध्या जी तैयार हैं, भव्य और दिव्य दीपोत्सव के लिए आप सभी का स्वागत है। वहीं, अयोध्या में दीपोत्सव का शुक्रवार को आगाज हुआ तो पूरी रामनगरी दुल्हन की तरह सजी–धजी नजर आई। हर तरफ उल्लास और भगवान श्रीराम की स्तुति व भजनों से रामनगरी राममय हो उठी है। इस दीपोत्सव में रामनगरी नया इतिहास रचने को बेकरार है। पहली बार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी इसमें शामिल हो रहे हैं। दीपोत्सव में पीएम मोदी के आगमन को लेकर तैयारियां चरम पर हैं। रामनगरी के मुख्य मार्ग सहित हाईवे तक की सड़कों को चमकाया जा रहा है। सड़कों के गड्ढे भरे जा रहे हैं, कई स्थानों पर नई सड़क बन रही है। हाईवे पर जगह–जगह पैचिंग की जा रही है। डिवाइडर समेत प्रमुख चौराहे रंगे जा रहे हैं। मोर दीप जला दीपोत्सव का शुभारंभ करेंगे प्रधानमंत्री दीपोत्सव के लिए राम की पैड़ी

पर बन रहे मुख्य मंच पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, राज्यपाल आनंदी बेन पटेल व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा राष्ट्रीय पक्षी मोर के रूप में बने दीप को जलाकर समारोह का शुभारंभ किया जाएगा। इस विशेष दीप को अविवि के अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास विभाग तथा ललित कला (फाइन आर्ट्स) विभाग के विद्यार्थियों ने तैयार किया है। 23 अक्तूबर को मनाए जाने वाले छठे दिव्य दीपोत्सव–2022 के शुभारंभ के लिए अविवि के फाइन आर्ट्स विभाग के छात्र–छात्राओं ने भव्य दीपक तैयार किया है। राष्ट्रीय पक्षी मोर जैसे बनाए गए इस दीपक को आकर्षक ढंग से सजाया जा रहा है। मुख्य मंच पर प्रज्ज्वलित होने वाला ये दीप अपने आप में एक व्यापक संदेश विश्लेषित करेगा।

कांग्रेस के हर प्रांतीय अध्यक्ष को तीन मंडलों की जिम्मेदारी : हाईकमान ने दी फैसले को मंजूरी

लखनऊ ब्यूरो : कांग्रेस में सभी छह प्रांतीय अध्यक्षों को तीन–तीन मंडलों की जिम्मेदारी दी जाएगी। इन्हें अपने मंडलों में मजबूत संगठन खड़ा करने के साथ ही चुनावों में बेहतर नतीजे के लिए जी–जान से जुटना होगा। इसके आधार पर ही सांगठनिक कामकाज के लिहाज से मूल्यांकन होगा। इन प्रांतीय अध्यक्षों के बीच कामों के बंटवारे की शीघ्र ही औपचारिक घोषणा की जाएगी। पार्टी हाईकमान ने प्रदेश अध्यक्ष के फैसले को मंजूरी दे दी है। कांग्रेस ने हाल ही में बसपा सांसद रहे बृजलाल खाबरी को प्रदेश अध्यक्ष बनाया है। इसके अलावा फरेंदा से कांग्रेस विधायक वीरेंद्र चौधरी, पूर्व मंत्री नसीमुद्दीन सिद्दीकी, पूर्व मंत्री व विधायक अजय राय, पूर्व मंत्री नकुल दुबे, अनिल यादव (इटावा) और योगेश दीक्षित को प्रांतीय अध्यक्ष नामित किया है। प्रदेश में 18 मंडल (कमिश्नरी) हैं। मंडलों का प्रभार देने के लिए प्रांतीय अध्यक्षों की राय भी ली जाएगी। प्रांतीय अध्यक्ष प्रदेशभर में कहीं भी सजातीय लोगों के सम्मेलन आयोजित कर सकेंगे। कांग्रेस ने फिलहाल दलितों और विशेषकर जाटवों में जनाधार बढ़ाने की रणनीति बनाई है। पार्टी का मानना है कि अभी तक बसपा के साथ रही जाटव बिरादरी का उससे मोहभंग हो रहा है। ऐसे में उन्हें कांग्रेस के नजदीक लाना चाहिए। इसी के तहत जाटव बिरादरी के खाबरी को प्रदेश अध्यक्ष बनाया गया है। इसी तरह ब्राह्मणों को जोड़ने की मुख्य जिम्मेदारी नकुल दुबे और योगेश दीक्षित को दी गई है। नसीमुद्दीन सिद्दीकी पूरे प्रदेश में मुसलमानों के बीच पार्टी के समर्थन में मुहिम चलाएंगे। फीडबैक के लिए बनाई गोपनीय टीम कांग्रेस ने पदाधिकारियों के कामकाज की समीक्षा के लिए 25 कार्यकर्ताओं की गोपनीय टीम बनाई है। यह टीम मीडिया से दूर रहकर सीधे प्रदेश अध्यक्ष को रिपोर्ट करेगी।

बिजली कंपनियों ने नहीं लौटाई कनेक्शन के लिए वसूली गई ज्यादा रकम

लखनऊ ब्यूरो : राज्य विद्युत नियामक आयोग के आदेश के बाद भी बिजली कंपनियों ने कनेक्शन के लिए उपभोक्ताओं से कॉस्ट डाटा बुक में तय रेट से ज्यादा वसूली रकम नहीं लौटाई। पावर कॉर्पोरेशन ने आयोग को बताया कि उपभोक्ताओं से 2.27 करोड़ रुपये ज्यादा वसूले गए हैं और सिर्फ नौ हजार रुपये वापस किए गए हैं। इस पर आयोग ने कड़ा रुख अपनाते हुए सभी बिजली कंपनियों के प्रबंध निदेशकों को एक नवंबर को व्यक्तिगत रूप से तलब किया है। पावर कॉर्पोरेशन की तरफ से निदेशक वितरण कमलेश बहादुर सिंह ने आयोग के समक्ष उपस्थित होकर लिखित जवाब दाखिल किया। इसमें उन्होंने बताया कि पूर्वांचल में 25.26 लाख रुपये, मध्यांचल में 2.01 करोड़ से ज्यादा और केस्को में 60 हजार की अधिक वसूली हुई है। दक्षिणांचल व पश्चिमांचल में ज्यादा वसूली नहीं हुई है। पूर्वांचल वितरण निगम के प्रबंध निदेशक ने बताया कि लापरवाही बरतने वाले 22 अवर अभियंताओं, 15 उपखंड अधिकारियों तथा 9 अधिशासी अभियंताओं के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई की गई है। इन जवाबों से असंतुष्ट नियामक आयोग के अध्यक्ष आरपी सिंह ने कहा कि इस तरह की हीलाहवाली और गलतबयानी नहीं चलेगी। सभी बिजली कंपनियों के प्रबंध निदेशक एक नवंबर को आयोग में व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर ज्यादा वसूली का पूरा ब्योरा देते हुए शपथ पत्र दें। उन्होंने कहा कि जरूरत पर आयोग कमेटी बनाकर पूरे मामले की सत्यता जांच

सकता है। चूंकि पावर कॉर्पोरेशन के अध्यक्ष एम. देवराज व प्रबंध निदेशक पंकज कुमार दोषियों के खिलाफ कार्रवाई के आदेश दे चुके हैं इसलिए उन्हें व्यक्तिगत रूप से हाजिर होने से छूट रहेगी। रकम हड़पने की साजिश : वर्मा याचिकाकर्ता राज्य विद्युत उपभोक्ता परिषद के अध्यक्ष अवधेश कुमार वर्मा ने बिजली कंपनियों पर उपभोक्ताओं से वसूली गई अधिक राशि को हड़पने की साजिश का आरोप लगाया। वर्मा ने कहा कि सभी बिजली कंपनियों ने अपनी सुविधानुसार जवाब देकर करोड़ों की ज्यादा वसूली को छिपाने की कोशिश कर रही हैं। उन्होंने दक्षिणांचल निगम के एमडी द्वारा कॉस्ट डाटा बुक का उल्लंघन न करने के दावे को गलत बताते हुए मैनपुरी के एक उपभोक्ता को जारी एस्टीमेट बतौर साक्ष्य सौंपा। उन्होंने उपभोक्ता द्वारा जमा की गई अधिक राशि की रसीद भी साक्ष्य के रूप में सौंपा। उन्होंने आयोग से कमेटी बनाकर बिजली कंपनियों के उपखंडों में इसकी जांच कराने की मांग की।

एस0के0डी0 अकाडमी में बच्चों ने मनाया दीवाली उत्सव

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय लखनऊ.धनतेरस व धन्वन्तिरी त्रयोदशी के अवसर पर एस0के0डी0 अकाडमी की डिग्री सेक्शन सहित सभी शाखाओं में दीवाली उत्सव बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। अकाडमी

की सभी शाखाओं में इस अवसर पर रंगोली प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसमें बच्चों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। साथ ही विद्यालय परिसर को रंग–बिरंगी रगोलियों से जगमगा दिया। इस अवसर पर बच्चों ने रंगोली के साथ दीपक, थाल सज्जा के साथ पोस्टर व कार्ड बनाओं प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया। विजेता बच्चों को पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित भी कियाय गया। सभी बच्चों की प्रतिभा की सराहना करते हुये निदेशक मनीष सिंह ने सभी को दीपावली की शुभकामनायें देते हुये पुरस्कार प्रदान किये। साथ ही पूरे एसकेडी स्टाफ को दीवाली के अवसर पर मिष्ठान्न, ड्राई फ्रूट्स व उपहार प्रदान किये।

बेली एसआरएन हास्पिटल व एएमए की फर्जी स्लिप लगाकर करते थे खेल

प्रयागराज ब्यूरो : नकली प्लेटलेट्स बेचने वाला गिरोह सरकारी अस्पतालों व ब्लड बैंक की फर्जी स्लिप के जरिये पूरा खेल संचालित करता था। वह नकली प्लेटलेट्स पाउच पर बेली, एसआरएन अस्पताल व एएमए बल्ड बैंक के नाम की फर्जी स्लिप चस्पा कर देते थे। इससे तीमारदार व डॉक्टर धोखा खा जाते थे। पुलिस अफसरों ने बताया कि गिरोह के सदस्यों के कब्जे से तीन पाउच नकली प्लेटलेट्स बरामद हुई हैं। असल में यह प्जाज्मा है, जिन्हें अलग–अलग पाउच में भरकर अभियुक्त प्लेटलेट्स बताकर बेचते थे। खास बात यह कि इन पाउचों पर बेली, एसआरएन और एएमए ब्लडबैंक की फर्जी स्लिप लगी हुई है। इस संबंध में पूछताछ करने

पर आरोपियों ने बताया कि यह फर्जी स्लिप हैं, जो वह प्रिंटिंग प्रेसों से छपवाते थे। बेली, एसआरएन अस्पताल की स्लिप लगी होने से तीमारदार शक नहीं करता था। वसूलते थे 10 गुना ज्यादा दाम गिरोह के सदस्यों ने बताया कि वह 350 रुपये में प्लाज्मा खरीदकर प्लेटलेट्स के नाम पर 10 गुना ज्यादा दाम वसूलते थे। बताया कि 350 एमएल प्लाज्मा का पाउच 350 रुपये में ब्लड बैंकों से खरीदते थे। इसके बाद इससे 50–50 एमएल के सात पैकेट तैयार करते थे। फिर इन प्लाज्मा पाउच को प्लेट्लेट्स बताकर प्रत्येक के तीन से पांच हजार रुपये तक वसूलते थे। अभियुक्तों में एक पूर्व एसआरएनकर्मी, दो लैब कर्मचारी नकली प्लेटलेट्स बेचने के इस खेल में एसआरएन अस्पताल का पूर्व संविदाकर्मी व दो निजी पैथोलॉजी कर्मचारी भी शामिल हैं। गिरफ्तार अभियुक्तों में शामिल कोरांव का दिलीप शुक्ला एसआरएन का पूर्व लैब कर्मचारी है, जो संविदा पर तैनात रह चुका है। उसने मोती लाल नेहरू मेडिकल कॉलेज से डिप्लोमा इन मेडिकल लैबोरेटरी कोर्स किया है। इसके अलावा सरफराज व सुनील पांडेय पैथोलॉजीकर्मी हैं। सरफराज एसआरएन अस्पताल के पास स्थित ग्लोबल लैब जबकि सुनील झूंसी स्थित अराध्य पैथोलॉजी का कर्मचारी है। इसके अलावा गिरफ्तार विकास, प्रवीण व अभिषेक छात्र हैं जो अलग–अलग कॉलेजों से पढ़ाई कर रहे हैं। राघवेंद्र ने उन्हें रुपयों का लालच देकर अपने गिरोह में शामिल किया है। असुरक्षित प्लाज्मा हो सकता है खतरनाक सीएमओ डॉक्टर नानक सरन का कहना है कि असुरक्षित तरीके से तैयार किया गया प्लाज्मा मरीज की जान के लिए खतरनाक हो सकता है। उन्होंने बताया कि खून से पृथक कर प्लाज्मा निकाले जाने की प्रक्रिया प्रशिक्षित डॉक्टरों के निर्देशन में बेहद सुरक्षित तरीके से अमल में लाई जाती है। इसके बाद प्लाज्मा को साफ स्थान पर नियमित तापमान पर स्टोर करना जरूरी है। ऐसा न करने पर यह खराब हो सकता है और चढ़ाए जाने पर सेहत के लिए खतरनाक हो सकता है। उनका कहना है कि गिरोह के लोगों की ओर से प्लाज्मा निकाले जाने और इसके रखरखाव में भी मानकों का पालन नहीं किया जाता था।

सनसनीखेज वारदात : चलती ट्रेन से जीआरपी के सिपाहियों ने युवक को नीचे फेंका : मौत

प्रयागराज ब्यूरो : छिवकी से चली मुंबई–हावड़ा मेल से घर लौट रहे अरुण भुइया (35) को जीआरपी के दो सिपाहियों ने ट्रेन से नीचे फेंक दिया। इससे उसकी मौत हो गई। ऊंचडीह स्टेशन के पास हुई घटना से आक्रोशित यात्रियों ने हंगामा भी किया। दोस्त की तहरीर पर प्रयागराज जीआरपी ने सिपाहियों पर केस दर्ज कर उनकी तलाश शुरू कर दी है। अरुण पुत्र किशुन भुइया आरोगारो थाना गावां जिला गिरिडीह, झारखंड का रहने वाला था। वह मुंबई में रहकर काम करता था। वह दीपावली के मद्देनजर घर लौटने के लिए 19 अक्तूबर को दादर स्टेशन से मुंबई–हावड़ा मेल में सवार हुआ। दोस्त अर्जुन भुइया व हरि दोनों निवासी झारखंड भी उसके साथ थे। अर्जुन ने बताया कि ट्रेन छूटने के कारण वह टिकट नहीं ले सके थे, ऐसे में ट्रेन में ही टीटीई से टिकट बनवाया। इसके बाद वह जनरल बोगी की गेट पर जबकि अरुण गली में खड़ा था। 20 अक्तूबर की रात ट्रेन छिवकी स्टेशन से आगे बढ़ी, तभी दो पुलिसकर्मी आए और टिकट चेक करने लगे। आरोप है कि टीटीई से बनवाया गया टिकट दिखाने के बावजूद पुलिसकर्मी नहीं माने और धक्कामुक्की व मारपीट शुरू कर दी। इसी दौरान अरुण ट्रेन से नीचे गिर गया और उसकी मौत हो गई। उस वक्त ट्रेन ऊंचडीह रेलवे स्टेशन पार कर रही थी। अन्य यात्रियों के बताने पर पता चला कि सिपाहियों ने अरुण से 200 रुपये भी लिए थे। यात्रियों ने चेन पुलिंग की लेकिन तब तक ट्रेन बहुत दूर निकल चुकी थी। अगले स्टेशन विंध्याचल पहुंचने के बाद उसने नीचे उतरकर पुलिसकर्मियों को सूचना दी। जिसके बाद शव को मर्चरी भेजवाया गया। उधर अगले दिन उसने जंक्शन स्थित जीआरपी थाने में पहुंचकर तहरीर दी। बताया कि आरोपी सिपाहियों में कृष्ण कुमार सिंह व आलोक कुमार पांडेय शामिल थे। सूत्रों का कहना है कि दोनों छिंवकी स्टेशन पर तैनात हैं और घटना के बाद से फरार हैं।तहरीर के आधार पर एफआईआर दर्ज कर ली गई। जीआरपी इंस्पेक्टर राजीव रंजन उपाध्याय ने बताया कि गैरइरादतन हत्या, एससीएसटी एक्ट समेत अन्य धाराओं में केस दर्ज कर लिया गया है। आरोपियों की तलाश की जा रही है। ट्रेन से गिरी महिला की मौत कीडगंज में ट्रेन से गिरकर महिला की मौत हो गई। ईदगाह के पास रेलवे ट्रैक के पास 50 वर्षीय अज्ञात महिला जख्मी हाल में मिली थी। एसआरएन अस्पताल में इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई।

लंका क्षेत्र में हाईवे किनारे मिला वृद्ध का शव : आधार कार्ड पर पता गुजरात का

वाराणसी ब्यूरो : वाराणसी के लंका थाना क्षेत्र अंतर्गत राष्ट्रीय राज्यमार्ग दो पर स्थित लौटूवीर रमना के पास सड़क किनारे 77 वर्षीय वृद्ध का शव मिला। सूचना पर एसीपी भेलूपुर प्रवीण कुमार और इंस्पेक्टर लंका फोर्स के साथ मौके पर पहुंचे। जेब से मिले आधार कार्ड से मृतक की शिनाख्त रामजीभाई दमजी भाई कनन निवासी नवी पंदरवाड़ी अदीपुर गांधीधाम, कच्छ (गुजरात) के तौर पर हुई। उसके जेब से 70 रुपये मिले। आधार कार्ड पर मिले पता से उसके परिजनों से संपर्क करने में पुलिस जुट गई। इंस्पेक्टर लंका बृजेश सिंह ने बताया कि वृद्ध की रात में किसी तरह हाईवे से नीचे

गिरने से मौत हो गई। उसके बाएं पैर पर चोट के निशान हैं।

बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे पर दिसंबर से देना होगा टोल टैक्स : कार वालों को देने होंगे 610 रुपये

लखनऊ ब्यूरो : बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे पर दिसंबर से टोल टैक्स वसूला जाएगा। उच्चस्तर पर सहमति बन चुकी है। संशोधित टोल दरें भी प्रस्तावित कर दी गई हैं। औद्योगिक विकास विभाग शीघ्र ही संबंधित शासनादेश जारी करेगा। यूपीडा की प्रस्तावित टोल दरों के अनुसार कार, जीप, वैन या हल्के मोटर वाहन पर 610 रुपये, हल्के व्यावसायिक यान, हल्के माल यान या मिनी बस पर 965 रुपये, बस या ट्रक पर 1935 रुपये, भारी निर्माण कार्य मशीन और 3–6 धुरीय यान पर 2965 रुपये और 7 या उससे अधिक धुरीय यान (माल ढुलाई वाले वाहन) पर 3795 रुपये टोल टैक्स लगेगा। उत्तर प्रदेश एक्सप्रेसवे पथकर उद्ग्रहण और फीस निर्धारण तथा उसकी वसूली चतुर्थ संशोधन नियमावली के प्रावधानों के अनुसार वर्ष 2022–23 के

लिए ये संशोधित दरें तय की गई हैं। इन निर्धारित दरों में 25 प्रतिशत की छूट शामिल है। बता दें, बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे कुल 296.07 किमी लंबा है। ये चित्रकूट, बांदा, हमीरपुर, जालौन, औरैया और इटावा से गुजरते हुए आगरा–लखनऊ एक्सप्रेसवे से मिला है। इससे बुंदेलखंड क्षेत्र सीधे राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से जुड़ गया है।

सम्पादक मंडल
श्री शिवशंकर द्विवेदी संयुक्त सचिव (सेवा निवृत्त) उ0प्र0 शासन, लखनऊ, पं. लाल साहब उपाध्याय (सत्यवेदानन्द जी), बाबा शक्ति नाथ (ज्योतिषाचार्य)श्री विजय कुमार तिवारी, श्री दीपचन्द्र मौर्य (एडवोकेट), श्री सुभाष चन्द्र सेठ,श्री ऋषिकेश द्विवेदी, श्री शिवशंकर तिवारी
प्रमुख कार्यालय– हिन्दी साप्ताहिक " देश की उपासना"
पता–ई 3464,राजाजी पुरम्(निकट मिनी स्टेडियम) लखनऊ उ0प्र0
लखनऊ सम्पादक– श्री पी0सी0श्रीवास्तव मों0 9415545107

स्वात्वाधिकारी की ओर से श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव पत्नी श्री प्रभुदयाल श्रीवास्तव मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक द्वारा देश की उपासना प्रेस, उपासना भवन, धर्मसारी, प्रेमापुर, जौनपुर उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक
श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव

सह सम्पादक
श्रीमती हेमा त्रिपाठी
मो0–7007415808,9628325542,9415034002

RNI संन्दर्भ संख्या – 24/234/2019/R-1
deshkiupasanadailynews@gmail.com

उपरोक्त सभी पद अवैतनिक है,समाचार पत्र में प्रकाशित लेख/समाचारों से सम्पादक की सहमति अनिवार्य नही
समाचार–पत्र से सम्बन्धित समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जौनपुर न्यायलय होगा।